नवंबर (प्रथम) 2021 कीमत : 12.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज़ खरी आवाज

जम्मूकश्मीर : महिला आयोग के बिना बढ़ रही है घरेलू हिंसा

- 5 कहानियां
- तेजप्रताप की टेढ़ी चाल
- रुदालियों का दर्द
- अंधविश्वास में फंसे लोग
- नीलू शंकर का खुलासा

Piramal
TETMOSOL®
टेटमोसॉल रोज़ लगाना, मतलब
त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.
खुजली
लाल दाने
फोड़े
पपड़ी
से राहत दे
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
नया
डस्टिंग पाउडर भी उपलब्ध
TETMOSOL®
DUSTING POWDER
ANTI-FUNGAL
TRIPLE SKIN BENEFITS
100 g
डॉक्टर का सुझाया
No.1
ब्रैंड#
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
contains Monosulfiram 5% w/w
Prescribed by Doctors*
नींबू जैसी ताज़ी महक
नया टेटमोसोल डस्टिंग पाउडर त्वचा के इन्फेक्शन, घमोरियां और खुजली से राहत देता है।
नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।
1800 22 9898
consumercare@piramal.com
^टेटमोसॉल साबुन खुजली (स्केबीज़) के कणो के कारण होने वाले संक्रमण के लिए है। टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह लें। संक्रमण की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें। #खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किया गया, MAT May 2020 में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें। रचनात्मक प्रदर्शन।
CMAC - TP/20210308-04

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज
संस्थापक : विश्वनाथ (1917-2002)
नवंबर (प्रथम) 2021
अंक: 691
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ
मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक वासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं--

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
· Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 12 रु., एक साल के लिए 564 रु., 2 साल के लिए 1128 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, नईगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

गहरी पैठ

जम्मूकश्मीर और बंगलादेश के निहत्थे निर्दोष हिंदू अपने ही देश के नागरिकों द्वारा मारे जा रहे हैं और महान हिंदू राष्ट्र बनाने का वादा करने वाले असहाय ताक रहे हैं. जम्मूकश्मीर में अचानक हिंदू बिहारी मजदूरों पर आक्रमण शुरू हो गए और लगभग उसी समय बंगलादेश में बंगलादेशी नागरिक हिंदुओं पर भी आक्रमण होने लगे. कुछ गोलियों से मारे गए, कुछ हिंसा में, कुछ के घर जले. धर्म के नाम पर एक गुट दूसरे के खून का प्यासा होने लगा, जबकि दोनों ही जगह न हिंदू, न मुसलमान इतनी फुरसत में हैं कि वे किसी तरह का दंगा सह सकें.

आर्थिक संकटों से जूझ रहे बंगलादेश और जम्मूकश्मीर दोनों में समय व शक्ति काम में लगनी चाहिए, पर लग रही है फालतू के दंगों में. जिन से तथाकथित कल्याण करने वाला धर्म बचाया जा सके. बंगलादेश ने हाल में उल्लेखनीय आर्थिक प्रगति की है और इस में वहां के हिंदुओं और मुसलमानों दोनों का बराबर का हाथ है और कोई खास वजह नहीं कि वे एकदूसरे के खून के प्यासे हों.

जम्मूकश्मीर में जो भी नाराजगी कश्मीरी मुसलमानों को है वह दिल्ली सरकार से है और बिहार से गए हिंदू मजदूर उस के लिए कहीं से जिम्मेदार नहीं हैं. ये लोग कश्मीर इसलिए आते हैं, क्योंकि यहां इस तरह का काम करने वाले नहीं मिलते. ये कमा रहे हैं पर साथ ही उन कश्मीरियों की सेवा भी कर रहे हैं जो काम नहीं करना चाहते, वरना क्यों गरम इलाकों में रहने वाले कश्मीर की ठंड में सर्दियों में अपने को ठिठुराएंगे?

धर्म को असल में लोगों के सुख से कुछ लेनादेना नहीं होता. जन्म से ही धर्म में कैद लोगों को चाहे जैसे मरजी हांका जा सकता है. धर्म ने सदियों से यह फार्मूला अपनाया है. झोंपड़ी में रह कर, भूखेनंगे लोगों के पिरामिड बनाए, रोम के चर्च बनाए, मसजिदें बनाईं, मकबरे बनाए, अंकोरवाट जैसे मंदिर बनाए, एलोरा और अजंता में पत्थर काट कर महल बनाए, अपने सुख के लिए नहीं उस धर्म के लिए जिस का न ओर पता है, न छोर और जो देता सपने और वादे है और लेता पैसा, औरतें और जान है.

जो हिंदू कश्मीर और बंगलादेश में मारे जा रहे हैं और जो मुसलमान मर रहे हैं उन की आपस में कोई दुश्मनी नहीं है, किसी ने एकदूसरे से कुछ लियादिया नहीं. धर्म ने कहा मार दो तो मार डाला. हमारे देश में भी यही काम हिंदू बजरंगी, सेवादल कर रहे हैं. सड़कों पर चल रहे निहत्थे मुसलमानों को मारापीटा जा रहा है, बिना किसी कारण के. न कश्मीर में, न बंगलादेश में और न भारत में दूसरे धर्म को लूटने की नीयत से भी नहीं मारा जा रहा. सिर्फ इसलिए पीट दो, मार दो कि उस का हुक्म उन के धर्म ने दिया है.

अफगानिस्तान में अमेरिका के भाग जाने से मुसलिम जगत की हिम्मत भी बढ़ गई तो बड़ी बात नहीं. तालिबानी अपने मनसूबे पहले ही जता चुके हैं. अफीम के व्यापार के कारण उन के पैर हर जगह फैले हैं. वे अब यूरोप में भी कहर मचाने लगे हैं, अमेरिका में न जाने फिर कभी न्यूयौर्क के ट्विन टौवर जैसा 9/11 हादसा हो जाए.

इस सब से क्या हिंदू या ईसाई अपना धर्म छोड़ कर मुसलमान बन जाएं तो बात होती. हर धर्म की अपने मूर्ख भक्तों पर इतनी पकड़ है कि वह जानता है कि लोग जान दे देंगे पर धर्म नहीं बदलेंगे. वैसे भी जब भी 10-20 लोग एक धर्म छोड़ कर हावी हो रहे धर्म को अपनाते हैं तो उन के पुराने धर्म वाले ही उन के दुश्मन हो जाते हैं और उन्हें मारने के स्पष्ट आदेश हर धर्म में हैं. एक तरह से हर धर्म का भक्त अपने धर्म का गुलाम है और ये हत्याएं भक्ति का प्रसाद हैं.

इन से न तो इसलाम को लाभ होगा और न हिंदू धर्म को कोई नुकसान होगा. पिसेंगे तो दोनों धर्मों के लोग. दुकानों की हलवापूरी चालू रहेगी. औरतें भी मिलती रहेंगी.

★★★

सुप्रीम कोर्ट ने यह तो कह दिया कि किसान सड़कों को रोक कर अपना आंदोलन नहीं कर सकते पर उन्हें यह नहीं बताया कि सारे देश में आखिर जिसे भी सरकार से नाराजगी हो वह जाए कहां? सारे देश में पुलिस और प्रशासन ने इस तरह से मैदानों, चौराहों, खाली सड़कों की नाकाबंदी कर रखी है कि कहीं भी सरकारी कुरसी की जगह धरनेप्रदर्शन की जगह बची नहीं है.

सारी दुनिया में सड़कों पर ही आंदोलन होते रहे हैं. हमेशा सत्ता का बदलाव सड़कों से हुआ है. जिन सड़कों के बारे में सत्ता के पाखंडियों का प्यार आजकल उमड़ रहा है वे ही इन पर कांवड़ यात्रा, महायात्रा, रथयात्रा, रात्रि जागरण, कथा कराते रहे हैं. सड़कों पर बने मंदिर सारे देश में आफत हैं जो हर रोज फैलते हैं, खिसकते नहीं हैं. सरकार और सुप्रीम कोर्ट को ये नहीं दिख रहे, किसान दिख रहे हैं.

किसानों से सरकार को चिढ़ यह है कि आज का किसान हमारे पुराणों के हिसाब से शूद्र है और वह किसी भी हक को नहीं रख सकता. उस का काम तो पैरों के पास बैठ कर सेवा करना है या उस गुरु के कहने पर अंगूठा काट देना है जिस ने शिक्षा भी नहीं दी. वह शूद्र आज पांडित्य के भरोसे बनी सरकार को आंखें दिखाए यह किसी को मंजूर नहीं. न सरकार को, न मीडिया को, न सुप्रीम कोर्ट को, क्योंकि इन सब में तो ऊंची जातियों के लोग बैठे हैं जिन की आत्मा ने पिछले जन्मों में ऋषिमुनियों की सेवा कर के आज ऊंची जातियों में जन्म लिया है.

सरकार और सुप्रीम कोर्ट तो कहती हैं कि हर जने (जिस का अर्थ हर काम करने वाले को) को काम करते रहना चाहिए, फल की चिंता नहीं करनी चाहिए. अब कर्म होगा तो फल किसी के हाथ तो लगेगा. पूरी गीता छान मारो कहीं नहीं मिलेगा कि कर्म का फल जाएगा किसे और क्यों. कर्म का फल तो कर्म करने वाले को मिलना चाहिए. अनाज का दाम किसान को मिलना चाहिए, साहूकार को नहीं. गीता के पाठ को नए कृषि कानूनों में पिरोने की चाल को समझ कर किसान अगर आंदोलन कर रहे हैं तो गलत नहीं है.

प्रोटैस्ट का हक ही लोकतंत्र की जान है पर प्रोटैस्ट की सोचने वालों को गिरफ्तार कर लेना, प्लानिंग करने वाले पर मुकदमा चला देना, उसे मैदान, सड़क न देना आज सरकार का हथियार बन गया है जिसे किसान तोड़ने में लगे हैं. सुप्रीम कोर्ट बिलकुल सही है जब कहती है कि प्रोटैस्ट का हक है पर बिलकुल गलत है जब कहती है कि सड़कों पर प्रोटैस्ट नहीं हो सकता. प्रोटैस्ट तो वहीं होगा जहां से सरकार को दिखे, जहां सरकार की कुरसी हो. किसान वीरान रण के कच्छ में जा कर तो अपना धरनाप्रदर्शन नहीं कर सकते जहां मीलों तक न पेड़ हैं, न मकान, न सरकारी नेता, न सरकार की कुरसी. ●

महिला आयोग के बिना बढ़ रही है घरेलू हिंसा

बिस्मा भट्ट

'हैलो, मैं तुम्हें सदरकोट पाईं गांव से फोन कर रहा हूं. अफरोजा अब इस दुनिया में नहीं रही. उस की ससुराल वालों ने उसे जान से मार दिया है. जल्दी आएं.'

फोन पर किसी अनजान आदमी के इन शब्दों ने उत्तरी कश्मीर के बांदीपोरा जिले के लहरवालपुरा गांव के डार परिवार के लिए दिसंबर की शांत, ठंडी सुबह की चुप्पी को अचानक तोड़ कर रख दिया था.

फोन गुलाम मुहम्मद डार के बेटे इरफान डार ने उठाया था. यह खबर सुनते ही उस पर कंपकंपी तारी हो गई और मोबाइल फोन उस के हाथ से छूट कर नीचे गिर गया.

इरफान ने कहा, "हमें तुरंत ही अफरोजा के गांव पहुंचना होगा. उस के साथ कुछ अनहोनी हो गई है." इतना सुनते ही डार परिवार अफरोजा के गांव सदरकोट पाईं रवाना हो गया.

अफरोजा के एक रिश्तेदार के शब्दों में, "जब हम वहां पहुंचे तो देखा कि अफरोजा की ससुराल के बाहर काफी भीड़ लगी हुई थी. पुलिस पहले से ही वहां पर मौजूद थी. अफरोजा का कमरा अंदर से बंद था. उस की लाश तक पहुंचने के लिए हम ने पुलिस की मदद से बड़ी मुश्किल से दरवाजा खोला.

"उस का चेहरा बुरी तरह जख्मी था और गले पर लाल निशान पड़ा हुआ था. अफरोजा की बेजान लाश के सिवा घर में और कोई भी नहीं था.

"साल 2020 के सितंबर का महीना था, जब 22 साल की अफरोजा का अपने से 6 साल बड़े शब्बीर के साथ निकाह हुआ था. शादी को एक हफ्ता भी नहीं बीता था कि शब्बीर ने उसे बुरी तरह से मारापीटा और 10वें दिन मायके छोड़ आया.

"वह 2 महीने से ज्यादा समय तक अपने पिता के घर पर रही. आखिरकार 15 दिसंबर को महल्ला समिति ने शब्बीर और उस के पिता से एक करार पर दस्तखत कराए कि अगर अफरोजा को दोबारा सताया गया तो उन्हें भारी जुर्माना देना पड़ेगा.

"पर करार पर दस्तखत के महज 6 दिन बाद ही उन दोनों के बीच लड़ाई हुई और शब्बीर ने अफरोजा को उसी के दुपट्टे से लटका कर फांसी दे दी. अफरोजा को मौत के घाट उतारने के बाद शब्बीर खिड़की के रास्ते कमरे से बाहर भाग गया."

बाद में, बांदीपोरा पुलिस ने शब्बीर और उस के घर वालों को अलगअलग जगहों से गिरफ्तार कर लिया. इस संबंध में एक पुलिस अफसर ने बताया, "शब्बीर ने पुलिस के सामने अपना जुर्म कबूल कर लिया है. उस ने बताया कि जेवर और मेहर (मेहर वह रकम है, जो दूल्हे द्वारा शादी के समय दुलहन को दी जाती है) पर लड़ाई में उस ने अपना आपा खो देने के बाद अफरोजा की हत्या की थी. हालांकि शब्बीर ने यह भी बताया कि उस के मातापिता उस के द्वारा किए गए अपराध से अनजान थे."

इस के उलट, अफरोजा के घर वालों ने आरोप लगाया कि शब्बीर अपने पिता के घर में रह रहा था और यह नामुमकिन है कि वे लोग अपने लड़के के इस घिनौने जुर्म से अनजान रहे हों.

दूसरी ओर शब्बीर के रिश्तेदारों के मुताबिक, वह एक शांत स्वभाव का आदमी था. लेकिन उस की इच्छा के खिलाफ उस के पिता ने अफरोजा से शादी करने के लिए उस पर दबाव डाला था.

शब्बीर के चचेरे भाई ने बताया, "शब्बीर को अफरोजा से शादी करने में जरा भी दिलचस्पी नहीं थी और उस ने अपने पिता को इस बारे में बता भी दिया था, पर इस का उन पर कोई असर नहीं हुआ."

अफरोजा, कश्मीर घाटी में घरेलू हिंसा की एकलौती शिकार नहीं है. यहां पिछले कुछ सालों में इस तरह के घिनौने मामले बढ़े हैं. कई मामलों में तो परिवार के सदस्यों ने ही औरत की बेरहमी से हत्या कर दी है.

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा किए गए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे (एनएफएचएस) ने जम्मूकश्मीर में महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के बारे में चौंकाने वाले तथ्य उजागर किए हैं. साल 2020 में जारी की गई सर्वे रिपोर्ट में दावा किया गया है कि साल 2019-20 में 18 से 49 साल के बीच की 9.6 फीसदी महिलाओं ने घरेलू हिंसा को झेला है, जबकि 5 साल पहले जब जम्मूकश्मीर एक राज्य था, सर्वे में कहा गया था कि 9.4 फीसदी महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार हुईं.

सर्वे से पता चलता है कि शहरी इलाकों की तुलना में जम्मूकश्मीर के गांवों में घरेलू शोषण और यौन उत्पीड़न के मामले ज्यादा हैं.

सर्वे में यह भी पाया गया है कि 18 से 49 साल की उम्र के बीच की तकरीबन 11 फीसदी गांवदेहात की महिलाओं ने घरेलू हिंसा देखी है, जबकि शहरी इलाकों में 5.9 फीसदी महिलाएं साल 2019-20 में घरेलू हिंसा की शिकार हुई हैं.

18-29 साल की आयुवर्ग की 5 फीसदी गांवदेहात की महिलाओं ने यौन हिंसा का अनुभव किया है, जबकि इसी आयुवर्ग की शहरी महिलाओं में ऐसे मामले 1.4 फीसदी हैं.

नहीं है राज्य महिला आयोग

साल 2019 में केंद्र सरकार द्वारा

ग्लोइंग स्किन के लिए
प्राकृतिक नुस्ख़ा
आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।
New
Dr. Juneja's
Roop Mantra
Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash
India's Most Trusted Brand
No. 1 Brand
Roop Mantra CUCUMBER Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra ALOEVERA Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra NEEM Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra MIX FRUIT Ayurvedic Medicinal Facewash
• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com
शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से निर्मित

अनुच्छेद 370 के तहत दिए गए जम्मूकश्मीर के विशेष दर्जे को हटाने और राज्य को 2 केंद्रशासित प्रदेशों में बांटने के बाद राज्य द्वारा संचालित कई आयोगों को खत्म कर दिया गया. इस में राज्य महिला आयोग भी शामिल था.

18 महीने से ज्यादा का समय बीत चुका है, फिर भी जम्मूकश्मीर प्रशासन ने यहां महिला आयोग बनाने के लिए प्रक्रिया शुरू नहीं की है. चूंकि महिला आयोग घरेलू हिंसा के खिलाफ महिलाओं की रक्षा करने वाला सरकार द्वारा संचालित एकलौता संगठन होता है, इसलिए इस के नहीं होने से यहां महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा के मामलों में बढ़ोतरी दर्ज की गई है.

अफरोजा की तरह ही एक और घटना 18 जनवरी को उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले के रफियाबाद के लदूरा इलाके में हुई थी, जहां 3 बच्चों की मां संदिग्ध अवस्था में मरी पाई गई थी.

35 साल की समीना (बदला नाम) के परिवार का आरोप है कि उसे उस की ससुराल वालों ने मार डाला, क्योंकि उन्होंने उस की गरदन, चेहरे, पैर और बांहों पर खरोंच देखी थी.

समीना के बड़े भाई खुर्शीद अहमद के मुताबिक, "समीना की ससुराल वालों और पति ने कहा कि नहाने के दौरान उस की वाशरूम में मौत हो गई, लेकिन जब हम ने उस की लाश देखी तो गरदन और चेहरे पर काफी ताजा निशान थे. उस के सिर के निचले हिस्से से खून निकल रहा था. हमें शक है कि उस की ससुराल वालों ने उस की हत्या कर दी है."

खुर्शीद अहमद का आरोप है, "पिछले 18 साल से उस की बहन को ससुराल वालों और पति द्वारा बहुत ज्यादा सताया जा रहा था. इन 18 सालों में उसे उस की ससुराल वालों ने बेरहमी से मारापीटा और कई मौकों पर घर से बाहर भी निकाल दिया था. अपनी शादी के बाद उस ने अपना ज्यादातर समय अपने पिता

के घर में बिताया, क्योंकि अपने ससुराल वालों के हिंसक बरताव के चलते वह वहां जाने से डरती थी."

रिपोर्ट लिखे जाने तक की बात करें, तो रफियाबाद पुलिस के मुताबिक समीना की लाश का पोस्टमार्टम कराया गया है, लेकिन अभी रिपोर्ट नहीं आई है. नाम नहीं छापने की शर्त पर एक पुलिस अफसर ने कहा, "पोस्टमार्टम रिपोर्ट में समय लगता है. हम सीआरपीसी की धारा 174 के तहत जांच कर रहे हैं. हम ने पूछताछ के लिए उस की ससुराल वालों को तलब किया है. हालांकि, हम पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही कोई गिरफ्तारी करने में सक्षम होंगे."

महिला आयोग के समाप्त होने के बावजूद जम्मूकश्मीर राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रह चुकी वसुंधरा पाठक को ईमेल, फोन और दूसरे संदेशों के जरीए संकट में आई महिलाओं की शिकायतें मिलती रहती हैं.

उन के मुताबिक, "औसतन, मुझे एक दिन में तकरीबन 5-10 शिकायतें मिलती हैं. मुझे उन महिलाओं से शिकायतें मिलीं जो न केवल घरेलू हिंसा की शिकार हुई हैं, बल्कि यौन उत्पीड़न, बाल शोषण, चिकित्सकीय लापरवाही और लिंग आधारित हिंसा की भी शिकार हुई हैं."

वसुंधरा पाठक का मानना है कि गांवदेहात की महिलाएं, जो सामाजिक और माली तौर पर कमजोर हैं, लिंग आधारित हिंसा की ज्यादा शिकार होती हैं, क्योंकि इन इलाकों तक आसानी से नहीं पहुंचा जा सकता है.

महिला हैल्पलाइन 181

अक्तूबर 2017 में जम्मूकश्मीर सरकार ने संकट में आई महिलाओं को चौबीसों घंटे मदद करने के लिए एक महिला हैल्पलाइन नंबर 181 शुरू किया था. 181 नंबर द्वारा मुहैया कराए गए आंकड़ों के मुताबिक, अप्रैल से सितंबर, 2020 के बीच कुल 922 मामले दर्ज किए गए हैं, जिन में घरेलू हिंसा के 619 मामले, यौन हिंसा के 5 मामले, साइबर अपराध और अश्लील काल के 47 मामले शामिल हैं, जबकि दूसरी श्रेणियों में 251 मामले दर्ज किए गए हैं.

अक्तूबर, 2017 से दिसंबर, 2020 तक कुल 3,376 मामले दर्ज किए गए. हैल्पलाइन शुरू करने के पहले 3 महीनों में जम्मूकश्मीर में 34 मामले दर्ज किए गए, साल 2018 में बेसहारा महिलाओं के 181 मामले दर्ज किए गए. हालांकि, साल 2019 में 181 नंबर के साथ दर्ज मामलों की संख्या में मामूली गिरावट देखी गई. साल 2019 में कुल 856 मामले दर्ज किए गए.

यहां यह बताना जरूरी है कि साल 2019 में जम्मूकश्मीर को तकरीबन 5 महीनों के लिए मोबाइल कनैक्टिविटी सहित पूर्ण संचार नाकाबंदी के तहत रखा गया था. इस के बाद धारा 370 को रद्द किया गया.

साल 2020 में दर्ज किए गए मामलों की कुल संख्या 1,600 थी, जो बताती है कि कैसे कोविड 19 महामारी को रोकने के लिए लगाए गए राष्ट्रीय लौकडाउन ने महिलाओं को उन के घरों के भीतर हिंसा की करतूतों के प्रति ज्यादा संवेदनशील बना दिया.

3 साल के आंकड़ों पर एक नजर डालने से पता चलता है कि जम्मू और लद्दाख की तुलना में कश्मीर में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले ज्यादा बढ़े हैं. केवल कश्मीर में कुल 1,756 मामले दर्ज किए गए हैं. इस के बाद जम्मू में घरेलू हिंसा के तकरीबन 1,570 मामले दर्ज किए गए हैं. लद्दाख में पिछले 3 साल में घरेलू हिंसा के 44 और दूसरी श्रेणी के 6 मामले दर्ज किए गए हैं.

डब्लूएचएल 181 की प्रबंधक पूर्णिमा धर ने बताया कि उन की टीम औसतन हर दिन 10 मामले दर्ज करती है. उन के मुताबिक, "डब्लूएचएल महिलाओं पर होने वाली हिंसा के खिलाफ काफी कुशलता से काम कर रहा है. हम पीड़ित को जरूरत पड़ने पर सलाह, डाक्टरी और कानूनी मदद व आसरा देते हैं और यह पक्का करते हैं कि आरोपी को कानून के अनुसार सजा दी जाए.

"अदालतों में महिलाओं से संबंधित मामलों से निबटने के लिए न्यायाधीशों की संख्या बहुत कम है, जिस के चलते आरोपी को सजा दिलाने के लिए प्रक्रिया में लंबा समय लगता है. फास्ट ट्रैक पर कुछ नहीं किया जा रहा है.

"निर्भया कांड के बाद हम ने सुना था कि ऐसे मामलों की सुनवाई फास्ट ट्रैक में होगी, लेकिन यहां तो निर्भया कांड का फैसला आने में भी 8 साल का समय लग गया था."

'धरती का स्वर्ग' कहे जाने वाले जम्मूकश्मीर में इतने लंबे समय के बाद भी महिला आयोग का गठन नहीं होना न केवल पीड़ित महिलाओं के साथ नाइंसाफी है, बल्कि कानूनी रूप से भी उचित नहीं है.

यह 'सभी को समान न्याय दिलाने' के संविधान के संकल्प पर भी चोट करता है, जिस के लिए हम सब को गंभीरता से सोचने की जरूरत है. ●

रुदालियों की अनकही दास्तां

देवेंद्रराज सुथार

भारतीय समाज में पहले दूसरों की मौत पर रोने के लिए रुदालियां हुआ करती थीं, जो पैसे ले कर जमींदार या ठाकुर की मौत पर मातम मनाने के लिए बुलाई जाती थीं.

उन रुदालियों का काम होता था कि वे पूरे जोर के साथ छाती कूट कर, दहाड़ें मारमार कर ऐसा माहौल बना देती थीं कि आने वाला रोने के लिए मजबूर हो जाए.

समाज में उन्हें हमेशा ही नीची नजरों से देखा जाता था और उन के साथ कठोरता भरा बरताव किया जाता था. उन के घर भी गांव की सरहदों के बाहर बने होते थे.

साल 1993 में कल्पना लाजमी ने बंगला की महान लेखिका महाश्वेता देवी के उपन्यास 'रुदाली' पर एक फिल्म भी बनाई थी. इस फिल्म का लता मंगेशकर और भूपेन हजारिका की आवाज में गाया गया एक गीत 'दिल हूमहूम करे, घबराए...' इन रुदालियों के निजी दुख को दिखाता है.

आज भी राजस्थान में दलित औरतों को जबरन अपने दुख में रुलाया जाता है. ऐसे हालात में कई दिनों तक तथाकथित सामंतों के घरों पर जा कर दलित औरतों को मातम मनाना पड़ता है.

राजस्थान के सिरोही जिले में दर्जनों ऐसे गांव मिले हैं, जहां दलित औरतों को ऊंची जाति के लोगों के घर जा कर किसी की मौत होने पर मातम मनाना पड़ता है.

सिरोही जिले के रेवदर इलाके में धाण, भामरा, रोहुआ, दादरला, मलावा, जोलपुर, दवली, दांतराई, रामपुरा, हाथल, उडवारिया, मारोल, पामेरा वगैरह इलाकों में रुदालियों के सैकड़ों परिवार रहते हैं.

अगर किसी तथाकथित सामंतों के यहां कोई मर जाता है, तो पूरे गांव के दलितों को सिर मुंडवाना पड़ता है. साथ ही, दलित परिवार के बच्चों से ले कर बूढ़े तक का जबरन मुंडन करवाया जाता है. अगर कोई दलित रोने न जाए या दलित सिर न मुंडाए, तो उस परिवार को सताने का दौर शुरू हो जाता है.

माना जाता है कि रुदाली की यह परंपरा राजस्थान में तकरीबन 200 साल से है. चूंकि इस बारे में कोई कानून नहीं है, इसलिए यह परंपरा अभी भी जारी है.

लोक मान्यता है कि रोने से कमजोरी होने का डर रहता है और चेहरा बदसूरत हो जाता है, इसलिए ऊंची जातियों ने अपने चेहरे की खूबसूरती बचाए रखने के लिए यह काम निचली जातियों को दे दिया गया.

बहरहाल, यह बड़े दुख की बात है कि आजादी के 74 साल बाद भी देश के एक हिस्से में कुप्रथा के नाम पर रुदालियों को बेमन से किसी पराए के लिए आंसू बहाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है. पर क्या इस तरह से दूसरों की मौत पर रोने से अपनों का अपने के प्रति शोक जाहिर हो जाता है?

एक लोकतांत्रिक देश में दलितों को संविधान से मिलने वाले हकों पर यह सीधी सी चोट ही है. आरक्षण की खिलाफत करने वाले कई लोग इस तरह की जातिवादी चोट को दरकिनार कर देते हैं, जो ठीक नहीं है.

आज जरूरत इस बात की है कि एक प्रजातांत्रिक देश में गलत रिवाजों और कुप्रथाओं से छुटकारे की दिशा में ठोस पहल हो और इस तबके को समाज की मुख्यधारा में लाने की भरसक कोशिश की जाए. ●

Dhanwantri
Divine-9
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

क्या आपके साथ ऐसा तो नही ?

★ जल्दी-जल्दी जुकाम या गला खराब होता है ★ शरीर में कमजोरी बनी रहती है या वजन घट रहा हो
★ एलर्जी, बुखार और इन्फैक्शन शीघ्र होता हो ★ जल्दी-जल्दी पेट खराब होता हो।

ये सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण हो सकते हैं।

Divine-9™
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

एक आयुर्वेदिक औषधि है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने में सहायक है, सोचना आपको है कि रोगों से लड़ना है या रोगों से घिरे रहना है।

मिलिए मेरी नई फैमिली से
जो रहे फिट हमेशा

2007 से ही अश्वगंधा, गिलोय व तुलसी औषधि Divine-9 में पहले से ही मौजूद है।

सन् 1921 से हमारे प्रसिद्ध अन्य उत्पाद सुन्दरी सुधा, स्वर्ण मधु, पाचन अमृत सुधा।

वितरक रहित क्षेत्रों में वितरक बनने हेतु सम्पर्क करें – 09258040152, 09521250052

निर्माता: धन्वंतरि फार्मास्युटिकल, काशीपुर (उत्तराखण्ड) मो0 : 07618570252, 09412245652

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–कतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

हेल्पलाइन नं. 9358256552

क्या कांग्रेसी कन्हैया की बांसुरी पर थिरकेंगे वोटर?

बीरेंद्र बरियार

28 सितंबर, 2021 को वामपंथियों के 'लाल सलाम' के नारे से पल्ला झाड़ कर कन्हैया कुमार ने कांग्रेस का हाथ थाम लिया. जहां एक तरफ कांग्रेस को भरोसा है कि वे बिहार में पार्टी का मजबूत चेहरा बनेंगे, वहीं दूसरी तरफ कन्हैया कुमार को भी यकीन है कि कांग्रेस के कंधे पर सवार हो कर बिहार में उन की राजनीति चमक उठेगी.

कांग्रेस को जहां बिहार में एक दमदार नेता की तलाश थी, वहीं भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी में हाशिए पर धकेल दिए गए कन्हैया कुमार को एक बड़े प्लेटफार्म की दरकार थी. कन्हैया कुमार के सहारे कांग्रेस राज्य में अपनी खोई हुई जमीन को एक बार फिर हासिल करने की कवायद में लगी है.

राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल (यूनाइटेड) और भारतीय जनता पार्टी के वोट बैंक में सेंध लगाना कन्हैया कुमार के लिए सब से बड़ी चुनौती है. पर क्या इस 'कन्हैया' की 'बांसुरी' की धुन में वोटरों को खींच पाने की ताकत है?

कन्हैया कुमार अचानक ही कांग्रेस में शामिल नहीं हो गए हैं. भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी में दरकिनार कर दिए जाने और पिछला लोकसभा चुनाव हारने के बाद से ही उन का इस पार्टी से मोह भंग हो गया था. उस के बाद से ही वे लगातार कांग्रेस नेताओं के संपर्क में रहने लगे थे.

कन्हैया कुमार ने साल 2019 में हुए 17वें लोकसभा चुनाव में भाकपा के टिकट पर बेगूसराय सीट से चुनाव लड़ा था. तब वे भाजपा के नेता गिरिराज सिंह से 4 लाख, 22 हजार वोट से हार गए थे.

पर पिछले कुछ महीनों से कन्हैया कुमार इस पार्टी में अलगथलग पड़ गए थे. जनवरी, 2021 में हैदराबाद में पार्टी की बैठक में अनुशासनहीनता के मामले में कन्हैया कुमार के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पास किया गया था. इस बैठक में कुल 110 सदस्य मौजूद थे और 107 सदस्यों ने इस निंदा प्रस्ताव का समर्थन किया था. कन्हैया कुमार पर पार्टी के सचिव इंदुभूषण के साथ बदसुलूकी करने का आरोप था.

'बिहार का लेनिनग्राद' कहे जाने वाले बेगूसराय से लोकसभा का चुनाव हारने के बाद से ही कन्हैया कुमार का भाकपा से मन ऊब गया था और वे पिछले कई महीनों से कांग्रेस के नेताओं से मिल रहे थे.

बिहार कांग्रेस के गलियारे में चर्चा है कि कन्हैया कुमार को बिहार कांग्रेस की कमान सौंपी जा सकती है. कन्हैया कुमार भी बारबार यह दोहरा रहे हैं कि कांग्रेस को बचा कर ही देश को बचाया जा सकता है. महंगाई, बेरोजगारी और गरीबी जैसे मसलों पर नाकाम रही भाजपा को कन्हैया कुमार अपने पक्ष में भुना सकते हैं.

यही नहीं, कन्हैया कुमार राजद नेता तेजस्वी यादव के लिए बड़ी चुनौती बन सकते हैं. तेजस्वी और कन्हैया के बीच छत्तीस का आंकड़ा है. इस के पीछे की वजह यह है कि साल 2019 में जब कन्हैया कुमार बेगूसराय लोकसभा सीट से चुनावी मैदान में उतरे थे, तो राजद ने उन के खिलाफ तनवीर हसन को मैदान में उतार दिया था. महागठबंधन के वोटों का बिखराव होने से राजग को सीधा फायदा मिला और भाजपा के गिरिराज सिंह जीत गए.

तेजस्वी यादव को जहां राजनीति विरासत में मिली है, वहीं कन्हैया कुमार छात्र राजनीति की उपज हैं. कन्हैया कुमार से मिली चुनौतियों का सामना सब से ज्यादा तेजस्वी यादव को ही करना होगा.

लालू प्रसाद यादव की गैरमौजूदगी में तेजस्वी यादव महागठबंधन के नेता बने हुए थे और सभी घटक दलों को कबूल भी थे. कन्हैया कुमार के कांग्रेस में शामिल होने के बाद तेजस्वी यादव को कड़ी टक्कर मिलनी तय है.

तेजस्वी यादव के मुकाबले कन्हैया कुमार ज्यादा तेजतर्रार और काफी पढ़ेलिखे नेता हैं. कन्हैया कुमार अपनी सटीक बातों के दम पर अच्छेअच्छे नेताओं की जबान पर ताला लगा सकते हैं. कांग्रेस अगर महागठबंधन में रही, तो तेजस्वी और कन्हैया के बीच की खींचतान को देखना दिलचस्प होगा.

फिलहाल राजद कन्हैया कुमार को कितने हलके में ले रहा है, इस का नमूना राजद के प्रवक्ता भाई वीरेंद्र ने तब पेश किया, जब उन से पूछा गया कि कन्हैया कुमार के कांग्रेस में शामिल होने से बिहार में महागठबंधन पर क्या असर पड़ेगा, तो उन्होंने तपाक से सवाल दाग दिया कि यह कन्हैया कौन है?

गौरतलब है कि साल 1990 में लालू प्रसाद यादव के सत्ता में आने के बाद कांग्रेस लगातार कमजोर होती गई. अब वह सबकुछ लुटा कर होश में आई है और कन्हैया कुमार के भरोसे अपनी डूबती नैया को पार लगाने की जुगत में लग गई है.

कन्हैया कुमार की वजह से अगड़ी जातियों का एक बड़ा हिस्सा फिर से कांग्रेस से जुड़ सकता है, वहीं मुसलिमों में भी कन्हैया कुमार की अच्छीखासी पैठ है.

कांग्रेस के बड़े नेता कहते हैं कि जब तक कांग्रेस राजद से नाता नहीं तोड़ेगी, तब तक कांग्रेस का कुछ नहीं होने वाला है. आज की तारीख में बिहार कांग्रेस कुछ भी खोने की हालत में नहीं है, ऐसे में रिस्क ले कर बड़ा दांव खेला जा सकता है.

राजद से नाता तोड़ कर कांग्रेस अकेले अपने दम पर चुनाव मैदान में उतरे, तो उस से बिदका हुआ वोट बैंक दोबारा हासिल हो सकता है. राजद के भरोसे नैया पर लगाने की सियासत को छोड़ने का समय आ गया है.

साल 1985 तक कांग्रेस की हालत बिहार में काफी मजबूत रही थी. उस साल बिहार विधानसभा की कुल 323 सीटों (उस समय झारखंड बिहार का ही हिस्सा था) में से 196 सीटें कांग्रेस के खाते में आई थीं. तब 39.30 फीसदी वोट कांग्रेस को मिले थे.

उस के बाद से ले कर अब तक बिहार में राज कर रहे लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार, सुशील कुमार मोदी और रामविलास पासवान जैसे धुरंधर नेता तो कांग्रेस विरोध की राजनीति की उपज हैं. कांग्रेस की कब्र पर ही दर्जनों बड़े नेताओं की फसलें पैदा हुई हैं और फलीफूली हैं.

लालू प्रसाद यादव के बिहार की सत्ता में आने के बाद से कांग्रेस में गिरावट शुरू हो गई थी. साल 1990 में कांग्रेस को 323 सीटों में से केवल 71 सीटें ही मिल सकी थीं और उस का वोट फीसदी 24.86 रहा था.

उस के बाद से ही कांग्रेस का ग्राफ तेजी से गिरता गया. साल 1995 में वह 320 सीटों पर चुनाव लड़ी थी और उसे 29 सीटें मिली थीं. उस का वोट फीसदी 16.51 हो गया था. साल 2000 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस 323 सीटों में से 23 सीटों पर ही जीत सकी थी और उस का वोट बैंक घट कर 11.06 फीसदी रह गया था.

साल 2005 में कांग्रेस ने 51 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे और 9 सीटें ही उस के खाते में आ सकी थीं. उस का वोट फीसदी बढ़ कर 29.04 हुआ था, पर सीटें नहीं बढ़ सकी थीं. साल 2010 में वह 243 सीटों पर लड़ी थी, पर उसे केवल 4 सीटों पर ही जीत मिली थी. वहीं वोट 8.37 फीसदी मिल सके थे.

साल 2015 में महागठबंधन के बैनर तले 41 सीटों पर कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार उतारे थे और उसे 27 सीटों पर जीत मिली थी. तब उस का वोट फीसदी भी बढ़ कर 39.49 हो गया था.

साल 2020 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के 70 उम्मीदवार मैदान में उतरे थे, पर 19 ही विधानसभा में पहुंच सके थे.

कांग्रेस की नजर अब राज्य की 11 फीसदी अगड़ी जातियों, 16 फीसदी मुसलमानों और 14 फीसदी दलितों के वोट पर है. इसी को साधने के लिए कन्हैया कुमार को आगे लाया गया है.

अब देखने वाली बात यह होगी कि कन्हैया कुमार कांग्रेस के खिसक चुके वोट बैंक को किस तरह से अपने पाले में ला सकते हैं? ●

Mr. Cook®

Pressure Cookers

देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...

United Metalik Private Limited

Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

✖ उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड + मध्य प्रदेश + राजस्थान + दिल्ली व अन्य राज्य परिशिष्ट

समस्या :

बिजली गुल टेंशन फुल

देवेंद्रराज सुथार

रात के ठीक 9 बजे हैं, लेकिन बिजली नदारद है. छोटे बच्चों के रोने की आवाज साफ सुनी जा सकती है. आसमान में चांद नहीं है. तारों की धीमी जगमगाहट में गृहिणियां खाना बना रही हैं.

अनंत सितारों से भरे आकाश की तरह समस्याएं भी अनंत को छू रही हैं. मोबाइल फोन की बैटरी मौत के कगार पर है. बिजली कब आएगी, यह सवाल भूखे गांव वालों की जबान पर तैर रहा है.

यह नजारा राजस्थान में अघोषित बिजली संकट की भयावहता की ओर इशारा कर रहा है. कमोबेश 4-5 दिनों से रोजाना हम इन हालात से गुजर रहे हैं. गरमी में पसीने से लथपथ हर किसी के मन में राज्य सरकार की बदइंतजामी को ले कर काफी गुस्सा है.

गौरतलब है कि जोधपुर डिस्कौम के गांवदेहात के इलाके में 3 से 4 घंटे तक की बिजली कटौती की जा रही है. इतना ही नहीं, सभी नगरपालिका क्षेत्रों (जिला हैडक्वार्टर को छोड़ कर) में दिन में एक घंटे की बिजली कटौती हो रही है. जयपुर की कालोनियों में भी 4 घंटे से 7 घंटे तक बिजली कटौती की घोषणा की गई है.

ऐसे में गांवों की हालत बद से बदतर है. वहां लोगों को 8 से 9 घंटे अघोषित बिजली कटौती का सामना करना पड़ रहा है. इस की वजह साफ है और सरकार ने भी माना है कि देश में कोयला संकट गहराता जा रहा है.

कोयला संकट गहराने का सीधा असर बिजली के प्रोडक्शन पर पड़ रहा है, क्योंकि देश में ज्यादातर बिजली कोयले से पैदा होती है.

कोयले की कमी के चलते राजस्थान में गहराते बिजली संकट पर ऊर्जा विभाग काफी चिंतित है. इस चिंता के बीच सोलर एनर्जी प्रोडक्शन के इस्तेमाल को बिजली संकट से जोड़ कर देखा जा रहा है.

याद रहे कि राजस्थान सोलर एनर्जी प्रोडक्शन में देश में पहले नंबर पर होने के बावजूद शहरी और गांवदेहात के इलाकों में अघोषित बिजली कटौती करनी पड़ रही है.

राजस्थान 7,738 मैगावाट सौर ऊर्जा क्षमता उत्पादन कर देश में पहले पायदान पर है. इस आंकड़े से लगता है कि राजस्थान में बिजली की कोई कमी नहीं है, फिर भी बिजली उपभोक्ताओं को सस्ती बिजली नहीं मिल पा रही.

विभाग को यह भी पता है कि ऊर्जा के विभिन्न माध्यमों में सोलर एनर्जी प्रोडक्शन सब से सस्ता होता है, लेकिन इस उपलब्धि का सही इस्तेमाल नहीं होने के पीछे राजनीतिक वजह ज्यादा मानी जा रही है.

राजस्थान में सोलर एनर्जी उत्पादन की सरकारी इकाइयां कम और बाहरी निवेशकों की ज्यादा हैं. निवेशकों को सोलर सैक्टर में निवेश की छूट दी गई, लेकिन उन से सस्ती बिजली लेने की दिशा में कोई ठोस कोशिश नहीं की गई. इसी वजह से ज्यादा निवेशक अपनी बिजली दूसरे राज्यों में बेचते हैं.

कोयले से बिजली बनाने की लागत काफी महंगी होती है. इस के बावजूद राजस्थान की ज्यादातर उत्पादन इकाइयां धर्मल आधारित हैं. यही वजह है कि कोयले की कमी से बारबार उत्पादन प्रभावित होता है.

कोयले के संकट की वजह से 15 से 20 रुपए प्रति यूनिट की दर से महंगी बिजली खरीदनी पड़ती है, जिस का बोझ आम उपभोक्ता पर ही पड़ता है.

अगर देश की बात करें, तो देश में 135 बिजली संयंत्र हैं, जहां कोयले से बिजली का उत्पादन होता है.

कोयला उत्पादन पर एक नोट के मुताबिक, 1 अक्तूबर को इन 135 बिजली संयंत्रों में से 72 के पास 3 दिनों से भी कम का स्टौक था, वहीं 4 दिनों से 10 दिनों का स्टौक रखने वाले बिजलीघरों की संख्या 50 है.

अगस्तसितंबर, 2019 में बिजली की खपत 106.6 अरब यूनिट थी, जबकि इस साल अगस्तसितंबर में 124.2 बीयू की खपत हुई थी.

इसी अवधि के दौरान कोयले से बिजली का उत्पादन साल 2019 में 61.91 फीसदी से बढ़ कर 66.35 फीसदी हो गया. अगस्तसितंबर, 2019 की तुलना में इस साल के समान 2 महीनों में कोयले की खपत में 18 फीसदी की बढ़ोतरी हुई.

मार्च, 2021 में इंडोनेशिया से आने वाले कोयले की कीमत 60 डालर प्रति टन थी, लेकिन सितंबरअक्तूबर में इस की कीमत में 200 डालर प्रति टन की बढ़ोतरी हुई. इस से कोयले का आयात कम हो गया. मानसून के मौसम में कोयले से चलने वाली बिजली की खपत बढ़ गई, जिस से बिजली स्टेशनों में कोयले की कमी हो गई.

दरअसल, कोविड महामारी की दूसरी लहर के बाद भारत की अर्थव्यवस्था में तेजी आई है और बिजली की मांग भी अचानक से बढ़ गई है. पिछले 2 महीनों में अकेले बिजली की खपत में साल 2019 की तुलना में 17 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है.

इस बीच दुनियाभर में कोयले की कीमतों में 40 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है, जबकि भारत का कोयला आयात 2 सालों में अपने सब से निचले लैवल पर है.

हालांकि, भारत के पास दुनिया में कोयले का चौथा सब से बड़ा भंडार है, लेकिन खपत के मामले में भारत कोयले के आयात में दुनिया में दूसरे नंबर पर है.

आमतौर पर आयातित कोयले पर चलने वाले बिजली प्लांट अब देश में उत्पादित कोयले पर निर्भर हैं. इस वजह से पहले से ही कमी से जूझ रही कोयले की सप्लाई और भी ज्यादा दबाव में आ गई है.

हाल के सालों में भारत अपनी तकरीबन 140 करोड़ की आबादी की जरूरतों को कैसे पूरा कर सकता है और भारी प्रदूषण वाले कोयले पर अपनी निर्भरता को कैसे कम कर सकता है, यह सवाल सरकारों के लिए एक चुनौती रहा है.

फिलहाल तो सरकार ने कहा है कि वह उत्पादन बढ़ाने, सप्लाई और खपत के बीच की खाई को पाटने और ज्यादा खनन करने के लिए कोल इंडिया के साथ काम कर रही है.

सरकार को भी बंधक खदानों से कोयला मिलने की उम्मीद है. ये वे खदानें हैं, जो कंपनियों के कंट्रोल में होती हैं और उन से उत्पादित कोयले का इस्तेमाल वही कंपनियां करती हैं.

इन खदानों को सरकार के साथ समझौते की शर्तों के तहत कोयला बेचने की इजाजत नहीं है. भारत शौर्टटर्म उपायों से मौजूदा संकट से किसी तरह निकल सकता है, लेकिन देश की बढ़ती ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत को लंबी मीआद के उपायों में निवेश करने की दिशा में काम करना होगा. ●

सच्ची सहेली

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक

Divisa

- कठिन दर्द
- चिड़चिड़ापन
- थकान
- कमजोरी
- कमर कटना
- इम्यूनिटी

आदि में सहायक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IIA

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli

Available at all medical & general stores

आज भी लोग अंधविश्वास में फंसे हैं

धीरज कुमार

मुसाफिरों से भरी एक बस झारखंड से बिहार की तरफ जा रही थी. अचानक सुनसान सड़क के दूसरी तरफ से एक सियार पार कर गया. ड्राइवर ने तेजी से ब्रेक लगाए, झटका खाए मुसाफिरों में से एक ने पूछा, "भाई, बस क्यों रोक दी?"

बस के खलासी ने जवाब दिया, "सड़क के दूसरी तरफ से सियार पार कर गया है, इसलिए बस कुछ देर के लिए रोक दी गई है."

सभी मुसाफिर भुनभुनाने लगे. कुछ लोग ड्राइवर की होशियारी की चर्चा भी करने लगे.

उस अंधेरी रात में जब तक कोई दूसरी गाड़ी सड़क का वह हिस्सा पार नहीं कर गई, तब तक वह बस वहीं खड़ी रही, लेकिन किसी ने यह नहीं कहा कि यह अंधविश्वास है.

सड़क है तो दूसरी तरफ से कोई भी जीवजंतु इधर से उधर पार कर सकता है. यह आम सी बात है. इस में बस रोकने जैसी कोई बात नहीं है, जबकि कई लोग मन ही मन कोई अनहोनी होने से डरने लगे थे.

रास्ते के इस पार से उस पार कुत्ता, बिल्ली, सियार जैसे जानवर आजा सकते हैं. इसे अंधविश्वास से जोड़ा जाना ठीक नहीं है. इस के लिए मन में किसी अनहोनी हो जाने का डर पालना भी बिलकुल गलत है.

बिहार के रोहतास जिले के डेहरी में बाल काटने वाले सैलून तो सातों दिन खुले रहते हैं. लेकिन, सोनू हेयरकट सैलून के मालिक से पूछे जाने पर वे बताते हैं, "ग्राहक तो पूरे हफ्ते में महज 4 दिन ही आते हैं. 3 दिन तो हम लोग खाली ही बैठे रहते हैं.

"यहां के ज्यादातर हिंदू मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को बाल नहीं कटवाते हैं. इन 3 दिनों में इक्कादुक्का लोग ही बाल कटवाने आते हैं या फिर जिन का ताल्लुक दूसरे धर्म से रहता है, वे लोग आते हैं."

भले ही लोग 21वीं सदी में जी रहे हैं, लेकिन आज भी हमारी सोच 18वीं सदी वाली है. डेहरी के बाशिंदे विनोद कुमार पेशे से कोयला कारोबारी हैं. उन का एक बेटा है, इसलिए वे सोमवार के दिन बालदाढ़ी नहीं कटवाते हैं.

पूछे जाने पर वे हंसते हुए कहते हैं, "ऐसा रिवाज है कि जिन के एक बेटा होता है, उन के पिता सोमवार के दिन बालदाढ़ी नहीं कटवाते हैं. इस के पीछे कोई खास वजह नहीं है. गांवघर में पहले के ढोंगी ब्राह्मणों ने यह फैला दिया है, तो आज भी यह अंधविश्वास जारी है.

"दरअसल, लोगों के मन में सदियों से इस तरह की बेकार की बातें बैठा दी गई हैं, इसीलिए आज भी वे चलन में हैं.

"पहले के लोग सीधेसादे होते थे. इस तरह के पाखंडी ब्राह्मणों ने जो चाहा, वह अपने फायदे के लिए समाज में फैला दिया."

आज भी लोग गांवदेहात में भूतप्रेत, ओझा, डायन वगैरह के बारे में खूब बातें करते हैं. लोगों को यकीन है कि गांव में डायन जादूटोना करती है.

औरंगाबाद के एक गांव के रहने वाले रणजीत का कहना है कि उन की पत्नी 2 साल से बीमार है. उन की पत्नी की बीमारी की वजह कुछ और नहीं, बल्कि डायन के जादूटोने के चलते है, इसीलिए वे किसी डाक्टर को दिखाने के बजाय कई सालों से ओझा के पास दिखा रहे हैं. कई सालों से वे मजार पर जाते हैं और चादर चढ़ाते हैं.

रोहतास जिले के एक गांव में एक लड़की को जहरीले सांप ने काट लिया था. उस के परिवार वाले बहुत देर तक झाड़फूंक करवाते रहे.

झाड़फूंक के बाद मामला जब बिगड़ गया, तो उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे बचाया नहीं जा सका, जबकि अखबार में भी इस के बारे में प्रचारप्रसार किया जाता रहा है कि किसी इनसान को सांप के काटने पर झाड़फूंक नहीं कराएं, बल्कि अस्पताल ले जाएं.

अगर समय रहते उसे अस्पताल ले जाया गया होता तो बचाया जा सकता था, पर आज भी लोग अंधविश्वास के चलते झाड़फूंक पर ज्यादा यकीन करते हैं. अभी भी लोग इलाज कराने के बजाय सांप काटने पर झाड़फूंक करवाना ही ठीक समझते हैं.

आज भी लोग झाड़फूंक, मंत्र, जादूटोना वगैरह पर यकीन करने के चलते अपनी जान गंवा रहे हैं. वे यह नहीं समझ पा रहे हैं कि झाड़फूंक करवाने से कुछ नहीं होता है. इस से कोई फायदा नहीं होने वाला है. अगर समय रहते सांप काटने वाले इनसान का इलाज कराया जाए तो उस की जान बचाई जा सकती थी.

बिहार के कई शहरों में ज्यादातर दुकानदार शनिवार को अपनी दुकान के आगे नीबूमिर्च लटकाते हैं. हर शनिवार की सुबह कुछ लोग नीबूमिर्च को एकसाथ धागे में पिरो कर दुकानदुकान बेचते भी मिल जाते हैं.

तकरीबन सभी दुकानदार इसे खरीदते हैं. वे पुरानी लटकी हुई नीबूमिर्च को सड़क पर फेंक देते हैं. लोगों के पैर उस पर न पड़ जाएं, इसलिए लोग बच कर चलते हैं. कई बार तो लोग अपनी गाड़ी के पहिए के नीचे आने से भी इन्हें बचाते हैं.

कुछ लोगों का मानना है कि पैरों के नीचे या गाड़ी के नीचे अगर फेंका हुआ नीबू और मिर्च आ जाए तो जिंदगी में परेशानी बढ़ सकती है.

कुछ दुकानदारों का मानना है कि नीबूमिर्च लटकाने से बुरी नजर से बचाव होता है. दुकान में बिक्री खूब होती है. इस तरह देखा जाए, तो फालतू में नीबूमिर्च आज भी बरबाद किए जा रहे हैं, जबकि इस तरह के नीबूमिर्च लटकाने का कोई फायदा नहीं है.

आज भी बहुत से लोग गरीब हैं. पैसे की कमी में वे नीबूमिर्च खरीदने की सोचते भी नहीं हैं. इस तरह से यह तो नीबूमिर्च की बरबादी है. ऐसा कहने वाला कोई भी धर्मगुरु, पंडित, पुजारी, मौलवी नहीं होता है.

दरअसल, आज भी यह अंधविश्वास ज्यों का त्यों बना हुआ है. ऐसी बातें बहुत पहले से ही पाखंडी ब्राह्मणों, पंडेपुजारियों ने आम लोगों में फैला रखी हैं, इसीलिए ऐसा अंधविश्वास आज भी जारी है.

सरस पैलिस

औरंगाबाद की रहने वाली मंजू कुमारी टीचर हैं. उन का कहना है कि वे एक बार पैदल ही इम्तिहान देने जा रही थीं. उन्होंने वहां जाने के लिए शौर्टकट रास्ता चुना था.

अभी इम्तिहान सैंटर काफी दूर था कि एक बिल्ली उन का रास्ता काट गई. वे काफी देर तक वहीं खड़ी इंतजार करती रहीं, पर उस रास्ते से कोई गुजरा नहीं. उन्हें ऐसा लगा कि उन का इम्तिहान छूट जाएगा, इसलिए वे जल्दीजल्दी उस रास्ते से हो कर इम्तिहान सैंटर तक पहुंचीं.

उन के मन में धुकधुकी हो रही थी कि आज इम्तिहान में कुछ न कुछ गड़बड़ होगी. लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ. बल्कि उन का इम्तिहान उस दिन बहुत अच्छा हुआ. बाद में अच्छे नंबर भी मिले थे.

उस दिन से वे इस तरह के अंधविश्वासों से बहुत दूर रहती हैं. वे मानती हैं कि अगर वे अंधविश्वास में रहतीं, तो उन का इम्तिहान छूटना तय था.

दरअसल, बचपन से ही घर के लोगों द्वारा यह सीख दी जाती है कि ब्राह्मणों, पोंगापंडितों, साधुओं, पाखंडियों, धर्मगुरुओं की कही गई बातें तुम्हें भी इसी रूप में माननी हैं. बचपन से लड़केलड़कियों को यह सब धर्म से जोड़ कर बताया जाता है. उन्हें विज्ञान से ज्यादा अंधविश्वास के प्रति मजबूत कर दिया जाता है.

यही वजह है कि पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी अंधविश्वासों को लोग ढोते आ रहे हैं. विज्ञान यहां विकसित नहीं है, लेकिन अंधविश्वास खूब फलफूल रहा है. इस की जड़ें इतनी मजबूत हैं कि कोई काट ही नहीं सकता है.

यहां के लोग पर्यावरण, पेड़पौधे की हिफाजत करने के बजाय अंधविश्वास की हिफाजत करते हैं.

जब देश में राफेल आता है, तो रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को नारियल फोड़ कर पूजा करते हुए मीडिया के जरीए दिखाया जाता है, तो देश में एक संदेश जाता है कि आम लोग ही अंधविश्वास में नहीं पड़े हुए हैं, बल्कि यहां के खास लोग भी इसे बढ़ावा देना चाहते हैं, जबकि कोरोना काल में देशभर के मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे वगैरह सभी बंद थे.

लोगों को भगवान के वजूद के बारे में समझ आने लगा था. लोगों को यकीन हो गया था कि देवीदेवताओं की मेहरबानी से यह बीमारी ठीक होने वाली नहीं है, बल्कि वैज्ञानिकों द्वारा जब दवा बनाई जाएगी, तभी यह बीमारी जाएगी.

लोगों में देवीदेवताओं के साथ ही मंदिरमसजिद के प्रति भी आस्था कम हुई है, तो दूसरी ओर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राम मंदिर में सीधे लोट जाते हैं और यह संदेश देने की कोशिश करते हैं कि सबकुछ ऊपर वाला ही है.

और तो और, एक टैलीविजन चैनल वाले ने तो दिखाया कि उस समय नरेंद्र मोदी ने 'राम' का नाम कितनी बार लिया, इसीलिए देश के कुछ हिस्सों में कोरोना जैसी महामारी को बीमारी कम समझा गया, इसे दैवीय प्रकोप समझने की भूल हो गई.

देश में कोरोना कहर बरपा रहा था, तो बिहार के कुछ इलाकों में कोरोना माता की पूजा की जा रही थी.

रोहतास जिले के डेहरी औन सोन में सोन नदी के किनारे कई दिनों तक औरतों ने आ कर पूजापाठ की. नदियों के किनारे औरतें झुंड में पहुंच कर 11 लड्डू और 11 फूल चढ़ा कर पूजा कर रही थीं.

घर के मर्दों द्वारा औरतों को मना करने के बजाय उन्हें बढ़ावा दिया जा रहा था, तभी तो वे अपनी गाड़ी में बैठा कर उन्हें नदी के किनारे पहुंचा रहे थे.

इस तरह के अंधविश्वास मोबाइल फोन के चलते गांवदेहात में काफी तेजी से फैलते हैं, इसलिए जरूरी है कि मांबाप अपने बच्चों को विज्ञान के प्रति जागरूक करें. उन्हें शुरू से ही यह बताने की जरूरत है कि विज्ञान से बदलाव किया जा सकता है. विज्ञान हमारी जरूरतें पूरी कर रहा है. इस तरह के अंधविश्वास से हम सभी पिछड़ जाएंगे. ●

'लालू के लाल' की टेढ़ी चाल

बीरेंद्र बरियार ज्योति

पिछले तकरीबन 40 साल तक बिहार से ले कर दिल्ली तक अपनी धमक रखने वाले लालू प्रसाद यादव की पार्टी राजद और परिवार में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है. लालू यादव के बड़े बेटे और विधायक तेजप्रताप यादव ने अपने छोटे भाई तेजस्वी यादव और राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के खिलाफ मोरचा खोल रखा है.

इतना ही नहीं, तेजप्रताप यादव ने राजद के बराबर अपना नया संगठन भी बना लिया है, जिस का नाम छात्र जनशक्ति परिषद रखा है. इस संगठन का लोगो यानी चिह्न 'बांसुरी' रखा है. एक तरह से देखा जाए, तो उन्होंने राजद के चिह्न 'लालटेन' को भी छोड़ दिया है.

2 अक्तूबर, 2021 को अपने संगठन छात्र जनशक्ति परिषद के प्रशिक्षण शिविर में तो तेजप्रताप यादव ने अपने भाई तेजस्वी यादव और जगदानंद सिंह की धज्जियां उड़ा कर रख दीं.

तेजप्रताप ने तेजस्वी का नाम लिए बगैर कहा कि दिल्ली में उन के पिता लालू यादव को बंधक बना कर रखा गया है. उन्हें कोर्ट से जमानत मिले कई महीने गुजर गए और उन्हें पटना नहीं लाया जा रहा है. लालूजी की गैरमौजूदगी में जिस तरह से पार्टी को चलाया जा रहा है, उस से पार्टी चलने वाली नहीं है, टूट जाएगी, बिखर जाएगी.

उन्होंने आगे कहा कि उन के पिता अपने सरकारी निवास के आउटहाउस में नियमित रूप से बैठते थे और जनता से मिलते थे. उन के घर का दरवाजा हमेशा खुला रहता था. आज यह हालत है कि मेन गेट को बंद रखा जाता है. घर से कुछ पहले ही मोटा रस्सा लगा कर लोगों के आनेजाने पर रोक लगा दी गई है. ऐसे कहीं पार्टी चलती है क्या? जब जनता ही नहीं होगी तो पार्टी किस के लिए? राजनीति किस के लिए?

तेजप्रताप यादव इतने पर ही नहीं रुके. तेजस्वी के बाद उन्होंने जगदानंद सिंह पर हमला बोल दिया. उन्होंने कहा कि उन्हें पता है कि कुछ लोग राजद का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने का सपना देख रहे हैं. ऐसे लोगों का सपना वे कभी भी पूरा नहीं होने देंगे.

पार्टी और परिवार की बखिया उधेड़ने के बाद वे कहते हैं कि पिताजी की खराब सेहत को ध्यान में रख कर वे काफी दिनों तक चुप रहे, लेकिन उन की चुप्पी का लोग नाजायज फायदा उठाने लगे.

गौरतलब है कि साल 2022 में राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव होना है. इतना तो तय है कि लालू यादव ही फिर से अध्यक्ष बनेंगे, लेकिन अगर उन की सेहत ठीक नहीं रही तो तेजस्वी यादव को यह पद देने की अटकलें चल रही हैं.

लालू यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव की चाल शुरू से ही अलग तरीके की रही है. वे राजद से हसनपुर विधानसभा सीट से विधायक हैं.

16 अप्रैल, 1988 को जनमे तेजप्रताप यादव गरम मिजाज वाले हैं और अपनी बातों को बिना किसी लागलपेट के कहते हैं. वे माथे पर चंदन का टीका लगाते हैं और बांसुरी बजाते हैं.

उन के पिता लालू प्रसाद यादव जहां ब्राह्मणवाद और पाखंड के खिलाफ राजनीति करते रहे हैं, वहीं तेजप्रताप मंदिरों में घूमते हैं और मूर्तियों के आगे माथा टेकते हैं. मथुरा, वृंदावन के चक्कर लगाते हैं. लंबे बाल, गले में रुद्राक्ष की मालाएं, ललाट पर हवनकुंड की राख, हाथ मे त्रिशूल लिए जबतब घूमते रहते हैं.

वे कभी कृष्ण का रूप बना कर बांसुरी बजाने लगते हैं, तो कभी शंकर के भेष में तांडव करने लगते हैं. कभी गेरुआ कपड़े पहन कर विधानसभा पहुंच जाते हैं.

तेजप्रताप यादव ने अपना नया फेसबुक पेज बनाया है और उस का नाम रखा है 'सैकंड लालू तेजप्रताप यादव'.

जगदानंद सिंह से वे इसलिए भी नाराज हैं कि जगदानंद सिंह ने छात्र राजद के प्रमुख आकाश कुमार को हटा कर गगन कुमार को प्रमुख बना दिया था. आकाश कुमार तेजप्रताप के करीबी हैं.

जगदानंद सिंह के इस कदम से तेजप्रताप इस कदर बौखला गए कि उन्हें 'हिटलर' कह दिया. तेजप्रताप ने जगदानंद से सफाई मांगी कि उन से राय लिए बगैर आकाश कुमार को क्यों हटा दिया गया? जगदानंद ने इस का जवाब देने की जरूरत नहीं समझी. इस से तेजप्रताप का पारा सातवें आसमान तक जा पहुंचा.

इस बारे में जब जगदानंद सिंह से बात की गई, तो उन्होंने साफतौर पर कहा कि वे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के प्रति जवाबदेह हैं. प्रदेश छात्र राजद के अध्यक्ष का पद खाली था और भरा गया.

वहीं तेजस्वी यादव ने इस मामले से पल्ला झाड़ते हुए कहा कि पार्टी की बेहतरी के लिए प्रदेश अध्यक्ष को किसी भी तरह का फैसला लेने का हक है. उन के काम में किसी तरह का दखल देना ठीक नहीं है. साथ ही, तेजस्वी ने तेजप्रताप को नसीहत देने के लहजे में कहा कि बड़ों की इज्जत करना और

पिताजी को टैंशन नहीं देना चाहता - तेजप्रताप यादव

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की सेहत ठीक नहीं रहने की वजह से तेजस्वी यादव और राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने पार्टी की कमान संभाल रखी है. लालू यादव का बड़ा बेटा होने के बाद भी पार्टी में तेजप्रताप यादव को तरजीह नहीं दी गई है, जिस से वे खुद को अलगथलग महसूस कर रहे हैं. पेश हैं, उन से हुई बातचीत के खास अंश :

आप क्यों नाराज हैं? किस से नाराजगी है?

मैं किसी से नाराज नहीं हूं. राजद को बिखरते देख कर गुस्सा आता है. जिस पार्टी को पिताजी ने अपने खूनपसीने से सींचा है, उस की खराब हालत को मैं चुपचाप देख नहीं सकता.

आप लालूजी को यह सब बताते क्यों नहीं हैं?

लालूजी से कुछ छिपा हुआ रह सकता है क्या. उन से तो बात होती ही रहती है. उन की सेहत ठीक नहीं चल रही है और उन्हें ज्यादा टैंशन देना ठीक नहीं है.

आप के छोटे भाई तेजस्वी पार्टी के लिए मेहनत तो कर रहे हैं. आप क्या कहते हैं?

पार्टी की जड़ें मजबूत हैं, लेकिन कुछ लोग पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने का सपना देख रहे हैं. 4-5 लोग हैं. उन के नाम हर कोई जानता है, इसलिए मैं कुछ नहीं बोलूंगा.

आप ने अपना अलग संगठन क्यों बना लिया? इस से तो राजद कमजोर होगा?

राजद को मजबूत करने के लिए ही मैं छात्रों और नौजवानों को संगठित करने का काम कर रहा हूं.

अनुशासन में रहना बहुत ही जरूरी है.

लालू प्रसाद यादव को बंधक बनाने के तेजप्रताप के आरोप को टालते हुए तेजस्वी कहते हैं कि उन्हें कौन बंधक बना सकता है, जिस ने आडवाणी जैसे नेता को गिरफ्तार किया, देश को 2 प्रधानमंत्री दिए, 15 सालों तक बिहार पर राज किया.

हाल ही में राजद के वर्चुअल प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए लालू प्रसाद यादव ने तेजस्वी यादव के काम की खूब तारीफ की थी. उन्होंने कहा कि पिछले बिहार विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव में तेजस्वी ने काफी बेहतर तरीके से सरकार के खिलाफ हल्ला बोला. इस के साथ ही जगदानंद सिंह की भी तारीफ की. तेजप्रताप का उन्होंने जिक्र तक नहीं किया.

इस से साफ है कि तेजप्रताप को बड़बोलेपन का खमियाजा भुगतना पड़ रहा है. उन्हें पार्टी में हाशिए पर धकेल दिया गया है और जाहिर है कि यह सब लालू यादव की रजामंदी से हो रहा है. इन्हीं सब बात को ले कर तेजप्रताप यादव तिलमिलाए हुए हैं.

राजद के एक बड़े नेता दबी जबान में कहते हैं कि तेजप्रताप की एक ही खासीयत है कि वे लालू यादव के बेटे हैं. वे पार्टी में हंसीठिठोली की वजह बने हुए हैं. वे पार्टी को क्या मजबूत करेंगे? वे तो विरोधियों को हल्ला करने और राजद पर निशाना साधने का मौका देते रहते हैं.

लालू यादव और राबड़ी देवी के लाड़ले तेजप्रताप यादव राजनीतिक वजहों से कम, बल्कि अपनी खुराफात से ज्यादा चर्चा में रहते हैं.

मार्च, 2019 में अपनी पार्टी से बगावत कर उन्होंने 'लालूराबड़ी मोरचा' नाम की एक पार्टी भी बना डाली थी.

थोड़ा पीछे चलें, तो साल 2015 के विधानसभा चुनाव में जब राजद, जदयू और कांग्रेस के महागठबंधन की सरकार बनी थी, तो उस समय तेजस्वी यादव को तेजप्रताप से ज्यादा तरजीह दी गई थी. तेजप्रताप को जहां स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया था, वहीं तेजस्वी यादव को उपमुख्यमंत्री की कुरसी पर बिठाया गया था.

तेजप्रताप यादव की शादी भी डांवांडोल ही रही. राजद विधायक चंद्रिका राय की बेटी ऐश्वर्या राय से उन की शादी 12 मई, 2018 को हुई थी. शादी के 2-3 महीने बाद ही दोनों के बीच अनबन हो गई. उस के बाद से तेजप्रताप का अंदाज ही बदल गया. वे नवंबर, 2018 में अपनी पत्नी से तलाक लेने की अर्जी दाखिल कर चुके हैं.

तेजप्रताप बन गए बिजनैसमैन

जी हां, लालू प्रसाद यादव के लाड़ले तेजप्रताप यादव बिजनैसमैन बन गए हैं. उन्होंने एक अगरबत्ती कंपनी की शुरुआत की है. कंपनी का नाम है, 'एलआर राधाकृष्ण अगरबत्ती'. 'एलआर' का मतलब है लालूराबड़ी.

राजनीति में कुछ खास बात नहीं बनती देख जुलाई, 2021 में कंपनी की शुरुआत की गई. अगरबत्ती के लिए कोई मौल या बड़ी दुकान में शौरूम नहीं खोला गया है, बल्कि इसे लालू प्रसाद यादव के दानापुर वाले गायभैंसों के खटाल में ही औफिस बनाया गया है. अगरबत्ती बेचने के लिए बाकायदा मार्केटिंग स्टाफ की बहाली भी की गई है. उन की कंपनी में 100 रुपए से ले कर 1,000 रुपए की कीमत वाली अगरबत्ती मिलती है.

तेजप्रताप खुलेआम कहते थे कि उन की पत्नी उन्हें और उन के परिवार को गंवार कहती है. तेजप्रताप ने यह कह कर घर में खलबली मचा दी थी कि उन की पत्नी कहती है कि उन का भाई तेजस्वी उन से जलता है. उन्होंने अपनी पत्नी पर आरोप लगाया कि वह दोनों भाइयों के बीच दरार पैदा करना चाहती है.

पिछले लोकसभा चुनाव में उन के ससुर चंद्रिका राय जब सारण लोकसभा सीट से राजद के उम्मीदवार बनाए गए, तो तेजप्रताप ने इस का विरोध जताया था. जब उन की बात नहीं सुनी गई, तो वे अपने ससुर के खिलाफ चुनाव प्रचार में कूद गए थे.

इतना ही नहीं, जब उन के खास लोगों को राजद ने टिकट नहीं दिया, तो उन्होंने अपने समर्थकों को निर्दलीय चुनाव मैदान में उतारा और बाकायदा उन के सपोर्ट में प्रचार भी किया.

आज आलम यह है कि जिस राजद को लालू प्रसाद यादव ने तिनकातिनका जोड़ कर बड़ी ही मेहनत के बाद तैयार किया था, वह उन के जेल जाने के बाद बिखरने के कगार पर पहुंच गई है. उन की पत्नी राबड़ी देवी, बेटी मीसा भारती, बेटे तेजस्वी यादव और तेजप्रताप यादव उन की विरासत को संभालने में कुछ खास कामयाब होते नहीं दिख रहे हैं.

तेजस्वी यादव कुछ मजबूत जरूर हुए हैं, लेकिन भाई तेजप्रताप और बहन मीसा भारती के सियासी सपनों ने उन की आगे बढ़ने की रफ्तार पर ब्रेक लगा रखा है. ●

क्या शराब ? लीवर खराब

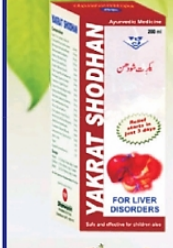

वैद्य सत्य नारायण धौली प्याऊ मथुरा ने एक साक्षात्कार में बताया कि लिवर (यकृत) शरीर का बहुत प्रमुख अंग है। भोजन को पचाना तथा शुद्ध रक्त का निर्माण करना यकृत (लिवर) का मुख्य कार्य है।जो लोग शराब पीते हैं उनके यकृत प्लीहा में प्रायः शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण पेट में दर्द की शिकायत शुरू हो जाती है। खाना हजम नहीं होता, कभी दस्त तो कभी कब्ज होने लगता है। बहुत ज्यादा समय होने पर पीलिया जैसी जानलेवा तथा कमजोरी देने वाली बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं। हमारा कथन है कि लोग शराब पीना छोड़ दें, यदि नहीं तो कम से कम अपने लिवर (यकृत) का विशेष ध्यान रखें। ''यकृत शोधन'' भाप से बनी वो औषधि है जो खाना खाने के बाद सुबह–शाम 4–4 चम्मच आधा गिलास पानी में पी जाती है। जिसका असर 12 घंटे में शुरू हो जाता है, सुबह को काला–काला मल निकलना शुरू हो जाता है और यकृत की शुद्धि प्रारम्भ हो जाती है। **''यकृत शोधन''** यकृत–प्लीहा के शोथ (एन्लार्जमेन्ट) में बहुत लाभकारी है। **''पाचन अमृत सुधा''** 8 चम्मच में 3 से 5 **' 'यकृत शोधन''** मिलाकर खाना खाने के तुरन्त बाद पीने से दो गुना लाभ होता है।

नोट : बच्चों को भी '' यकृत शोधन'' लिवर (यकृत) रोगों में दिया जा सकता है।

उपलब्ध न होने पर 9258040152 पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक आर्डर बुक करायें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के कुछ विक्रेताओं के नम्बर

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161655, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424666674, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331979, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

HEMODEX®

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्बीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®
STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर–एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

पहला भाग

महुआ

"महुआ..." अपने पिता की जोरदार आवाज सुन कर घरभर के कपड़े धोती 16 साल की महुआ अपने काले गरारे से हाथ पोंछते हुए झुग्गी के बाहरी दरवाजे तक दौड़ी चली गई.

महुआ घर में अकेली थी, इसलिए उसे अपनी उधड़ी हुई चोली से झांकते उभारों का भी कोई खयाल नहीं था. उसे बस यह पता था कि पिता के दूसरी बार आवाज लगाने से पहले वह न पहुंची तो फिर उस की खैर नहीं.

महुआ जब तक पिता की आवाज सुन कर दौड़ी हुई आई, तब तक वह अंदर आ कर पलंग पर बैठ चुका था.

काले लहंगे के घेर को घुटने से ऊपर उठा कर अपने हाथ पोंछते हुए महुआ बोली, "जी पिताजी, कुछ भूल गए थे क्या?"

बांके ने शायद बहुत दिनों के बाद अकेले में गौर से अपनी बेटी को देखा था... हाथ पोंछने के चलते लहंगा उठने पर उस की जांघों ने और फिर फटी हुई चोली से झांकते उभारों ने उस में अजीब सा जोश भर दिया.

बांके बाहरी दरवाजा खुला रखने पर उसे जबरदस्त डांट लगाना चाहता था, पर अपने भीतर उपजी हवस के चलते उस ने तुरंत अपने गुस्से को काबू में किया.

आवाज में एक खास नरमी और प्यार भरते हुए उस ने महुआ को अपने पास बुलाया, "इधर आओ."

पिता के पास पहुंच कर महुआ सामने खड़ी हो गई और बोली, "पीने का पानी लाऊं?"

"नहीं... पानी नहीं चाहिए... तू तो मेरे पास बैठ..."

महुआ बांके के बगल में कुछ दूरी पर बैठने लगी, तो उस ने पकड़ कर उसे अपनी गोद में बिठा लिया. अपनी बांहों में भींचते हुए उस के गालों पर प्यार करते हुए वह बोला, "क्या कर रही थी मेरी प्यारी बच्ची?"

"कपड़े धो रही थी..." महुआ ने कहा, फिर जब बांके ने उसे अपनी बांहों में कस कर भींच लिया, तो वह बोली, "अरे, मेरा दम घुट रहा है. अभी बहुत काम पड़ा है. मुझे छोड़िए... अब मैं बड़ी हो गई हूं."

"बड़ी हो गई है, तो क्या मैं तुझे गोद में नहीं बिठा सकता?"

"लेकिन, इस समय आप के मुंह से शराब की बदबू आ रही है और मेरा दम घुट रहा है... मुझे आप से डर लग रहा है."

"मुझ से डर? अपने पिता से डर?"

"हां, मुझे छोड़ दो, वरना मैं चिल्लाने लगूंगी," महुआ ने पूरा दम लगा कर खुद को पिता के चंगुल से छुड़ाया और छिटक कर दूर जा कर खड़े होते हुए बोली, "आज मैं मां से आप की यह हरकत बतलाऊंगी..."

"मैं कोई तेरी मां से डरता हूं? वह तो मेरे पैर की जूती है... जूती. अरे, तू मां से क्या, बाहर निकल कर सारी बस्ती में ढिंढोरा पीट दे, मैं अपनी पर आ जाऊंगा तो तुझे मुझ से कोई नहीं बचा सकता," कहते हुए बांके उठ कर लड़खड़ाते कदमों से फिर महुआ की तरफ लपका.

सरस सलिल

चली गई

जीतेंद्र मोहन भटनागर

तभी बाहर से किसी ने आवाज लगाई, "बांके..."

जानीपहचानी आवाज सुन कर बांके महुआ की तरफ बढ़तेबढ़ते रुक गया. वह मुड़ा और चल कर बाहर आया, "अरे, ठेकेदार साहब आप? इस बस्ती में... आइए बैठिए..." बाहर बरामदे में पड़े तख्त की तरफ इशारा करते हुए बांके ने उन्हें बिठाया.

तभी बाहर सामने थोड़ी दूर, ऊंचाई पर बने रेलवे ट्रैक से किसी ट्रेन के गुजरने की आवाज माहौल में गूंज गई. इंजन जब सीटी बजाता हुआ दूर निकल गया.

रेल के डब्बों की धड़धड़ाहट बंद हुई, तो तख्त पर बैठते हुए ठेकेदार श्याम सुंदर ने कहा, "बांके, यह मेरी बनाई और बसाई गई बस्ती है. कभी मैं भी एक साधारण मिस्त्री था. पर बाजुओं में दम हो और तिकड़म आती हो तो इस देश में कुछ भी हासिल किया जा सकता है.

"ये जो गरीबों की बस्ती को पक्का बनाने के सरकारी टैंडर मुझे मिलते हैं, ये भी मेरे जैसा आदमी ही हासिल कर सकता है. अब आजकल जो शौचालय बनाने का ठेका मुझे मिला है और जिस में तुम काम कर रहे हो, इस के लिए भी मुझे बड़ी मशक्कत और पैसा खर्च करना पड़ा है.

"यह तो हुई मेरी बात, अब तुम यह बताओ कि आज काम पर से चले क्यों आए? तुम जानते हो कि मुझे इस महीने में ही हर गंदी बस्ती और दलितों के मकानों में शौचालय बना कर देने हैं, वरना मेरा लाखों रुपयों का अगला टैंडर फंस जाएगा.

"यह महीना खत्म होने में केवल 3 दिन बचे हैं और 22 शौचालय अभी और बनने हैं. कल मजिस्ट्रेट साहब दौरे पर भी आने वाले हैं और तुम हो कि बद्री मिस्त्री से लड़ कर चले आए. मेरा तो इंतजार किया होता."

ठेकेदार के चुप होते ही बांके बोला, "मैं बद्री के साथ काम नहीं करूंगा."

"पर क्यों?"

"सारी औरतें क्या उसी के लिए रखी हैं? आज मैं ने जब बिंदा को अपने साथ काम पर लिया, तो बद्री अड़ गया और बोला, 'बिंदा तुम्हारे साथ काम नहीं करेगी, तुम राजा को ले लो.'

"इस का मतलब तो यह हुआ कि सारी रानियां वह रखेगा और मेरे हिस्से में राजा जैसे घटिया लेबर आएंगे," बांके गुस्से में अपनी बात कहे जा रहा था.

बांके चुप हुआ तो श्याम सुंदर बोला, "बांके, तुम समझते क्यों नहीं कि बद्री मेरा बहुत पुराना मिस्त्री है. किस लेबर को किस मिस्त्री के साथ रखना है, यह जिम्मेदारी भी मैं ने उसे ही दे रखी है.

"तुम उस के साथ काम नहीं करना चाहते हो तो मत करना, पर इस समय मेरी इज्जत का सवाल है. समय से ठेका पूरा कर के देना है, इसलिए तुम मेरे साथ चलो."

बांके ने कुछ देर सोच कर कहा, "ठीक है, पर मुझे बिंदा चाहिए."

"वह मैं देख लूंगा, अभी तो साथ चलो."

"ठीक है, मैं आप के साथ ही चलता हूं, पर आज से जब तक यह ठेके का काम खत्म नहीं होता, तब तक बिंदा मेरे साथ ही काम पर लगेगी."

"अच्छा बाबा, मैं बद्री को समझा

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

GROWMED®

नकलों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।

AD VITAMIN
बेबी ऑयल

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।
प्रत्येक में Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U. Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

GROWMED®

PAIN RELIEF Gel & Tablet

आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.

• CALL : 9431237784, 8987383154

लूंगा, तुम चलो तो सही."

"चलता हूं," कहते हुए बांके ने अंदर की ओर अपना मुंह कर के आवाज लगाई, "महुआ."

महुआ अंदर चली गई थी. दोबारा आवाज सुनी तो सहम गई. आवाज सुन कर पहुंचना तो था ही, पर इस बार उस ने अपने सीने पर दुपट्टा डाल लिया था.

महुआ सामने आई, तो श्याम सुंदर भी महुआ के बदन से अपनी नजरें नहीं हटा पाया. उसे देख कर पूछा, "यह तुम्हारी बेटी है?"

"हां," बांके बोला.

"घर का कामकाज कर लेती है?"

"बिलकुल कर लेती है."

"तुम ने कभी बताया नहीं, तुम्हारी मालकिन ऐसी ही किसी लड़की की तलाश में है. तुम चाहो तो कल से इसे काम पर भेज सकते हो. अपने साथ ही ले आना.

"इस के काम करने के 5,000 रुपए महीना मैं तुम्हें अभी एडवांस में देता हूं," कह कर उस ने अपनी सदरी की जेब से 5,000 रुपए निकाल कर बांके को पकड़ा दिए.

बांके ने वे रुपए महुआ को देते हुए कहा, "ले, ये रुपए रख ले. कल से तुझे ठेकेदार के घर पर काम करने जाना है."

जब बांके ठेकेदार के साथ चला गया, तो महुआ ने तेजी से दरवाजा बंद कर लिया और उन रुपयों को अपनी हथेली में दबा कर घसीटा को याद करने लगी. उसे रोज की तरह सामने से गुजरने वाले घसीटे की साइकिल की घंटी बजने का इंतजार था.

जैसे ही महुआ को घंटी की आवाज सुनाई देनी शुरू हुई, वह दरवाजे पर आ कर खड़ी हो गई. उसे खड़ी देख कर घसीटा अपनी साइकिल एक तरफ खड़ी कर के अंदर आ गया.

महुआ हमेशा की तरह उसे अपने कमरे में ले गई. वहां दोनों ने एकदूसरे को जीभर कर प्यार किया, फिर महुआ उसे आज रात की योजना बताने लगी.

उस की पूरी बात सुन कर घसीटा बाहर की तरफ बढ़ते हुए बोला, "ठीक है, मैं तैयार रहूंगा."

घसीटा के जाते ही महुआ दरवाजा बंद कर के अंदर आ कर पलंग पर बैठ कर बीते हुए दिनों की बातें सोचने लगी...

बचपन में अपनी जिद पर जब महुआ ने स्कूल जाना शुरू किया था, तो बांके को बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता था कि वह पढ़ेलिखे. जब वह पढ़ालिखा नहीं है और चमकी भी केवल तीसरी जमात पास है, तो महुआ पढ़ कर क्या करेगी.

बांके को लगता था कि ज्यादा पढ़लिख कर महुआ हाथ से निकल जाएगी, ठीक उसी तरह जिस तरह चमकी को उस के बाप के हाथ से निकाल कर वह ले आया था.

वजह, 5वीं जमात पास करने के बाद बांके को लगा कि जिस तरह महुआ के शरीर का तेजी से विकास हो रहा है और वह 10 साल की उम्र में ही 13 साल की लगती है, तो 8वीं जमात पास करतेकरते वह 16 साल की दिखने लगेगी, इसलिए जब महुआ ने 5वीं जमात के आगे पढ़ने की बात की तो उस ने आगे पढ़ाने से साफ मना कर दिया.

चमकी ने जब महुआ का पक्ष लिया और महुआ भी जब जिद पर आ गई तो उस दिन बांके का दिमाग खराब हो गया. उस ने दोनों को ऐसा धुना कि चमकी तो कांप कर रह गई और महुआ रोती ही रही.

महुआ स्कूल तो नहीं गई, पर उसे अपने बाप से बहुत नफरत हो गई थी. 5वीं जमात पास करने के बाद आगे के साल उस के उस बस्ती के बाहर सब तरह की दलित जातियों के बच्चों के साथ खेलतेकूदते बीते.

कोई भी ट्रेन जब सामने से गुजरती, तो महुआ भी उन बच्चों के साथ शरारत करती. अंदर से झांकते मुसाफिरों को चिढ़ाती और ट्रेन रुक जाती तो ट्रेन के पास जा कर उसे छू कर देखती.

उस का मन करता कि वह उस ट्रेन में बैठ कर दूर चली जाए... बहुत दूर, जहां उस का पिता न पहुंच सके.

यह सब 2-3 साल चला, फिर जब फिरोजा महुआ की सहेली बनी, तो वह भी फिरोजा की तरह थोड़ा गंभीर रहने लगी. फिरोजा उस से 2 साल बड़ी थी.

एक दिन जब महुआ फिरोजा के घर में उस से बैठी बातें कर रही थी, तो अचानक घबरा के टाट से घिरे बाथरूम की तरफ उठ कर भागी.

उस की परेशानी जानते ही फिरोजा ने उसे सैनेटरी पैड और नया अंडरवियर दिया और बिठा कर समझाया कि ऐसा हर लड़की के साथ होता है.

बाहर म्यूनिसिपैलिटी के नल से पानी भरते समय भी फिरोजा और महुआ एकदूसरे की मदद करतीं. उन की इस दोस्ती के बस्ती में बहुत चर्चे थे.

उस बस्ती के जवान लड़के भी मौका पा कर इन दोनों पर लाइन मारा करते. 1-2 तो बहुत करीब तक उन से चिपट जाना चाहते.

इन दोनों का मन भी करता कि उन में से जो 1-2 बहुत स्मार्ट से दिखते हैं, उन से अकेले में बात करें. ये उन्हीं सब शैतान बच्चों में से कुछ थे, जिन के साथ खेलते हुए इन दोनों का बचपन बीता था.

एक बार महुआ ने फिरोजा से ऐसे ही पूछ लिया, "ऐ लाडो, तुझे इन लाइन मारने वाले लड़कों में कोई पसंद है?"

फिरोजा मुसकराते हुए बोली, "पहले तू बता."

"मुझे तो घसीटा पसंद है, अब तू बता..."

"मेरा दिल तो आफताब पर फिदा रहता है और कभी निकाह करूंगी तो इसी से."

लेकिन बाद में फिरोजा का ज्यादा बाहर घूमना उस के घर वालों ने बंद कर दिया था और जब कभी किसी काम से वह बाहर निकलती, तो उस की मां जद्दन बी उसे बुरके में भेजतीं और कहतीं कि महुआ को साथ ले लेना.

महुआ को उस का बुरका पहनना अच्छा लगता, तब वह उस से कह उठती, "फिरोजा, मेरा भी बुरका पहनने का बहुत मन करता है."

"ठीक है, मैं कभी तुझे बुरका गिफ्ट करूंगी." *(क्रमशः)*

बांके अपनी बेटी महुआ पर बुरी नजर क्यों रखता था? श्याम सुंदर ने महुआ के लिए 5,000 रुपए क्यों दिए थे? क्या महुआ घसीटा के साथ शादी करना चाहती थी? ***पढ़िए अगले अंक में...***

अब लाइलाज कैंसर का इलाज हर्बल दवाओं से भी सम्भव

अभी तक आम आदमी के मन में यही धारणा बैठी हुई है कि कैंसर लाइलाज बीमारी है। भारत में हर्बल चिकित्सा प्रणाली से गम्भीर रोगों के इलाज की इसमें व्यवस्था है तथा कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी से भी छुटकारा पाया जा सकता है। इस चिकित्सा द्वारा सभी प्रकार के कैंसर का इलाज संभव है।

कैंसर होने के कारण

वैसे तो कैंसर होने का कोई निश्चित कारण नहीं होता है फिर भी ज्यादातर कारणों में धूम्रपान, तम्बाकू, गुटखा, शराब, फास्टफूड, अनियमित दिनचर्या आदि कारण प्रमुख है।

हर्बल चिकित्सा ने दिया कैंसर रोगी को जीवनदान

मुंह के कैंसर व गांठ से पीड़ित **इस्लामुद्दीन गोरी निवासी सिंघाई निघासन लखीमपुर खीरी** को एक साल से कैंसर था और वह केवल तरल पदार्थों पर ही निर्भर थे इन्होने सीतापुर, लखनऊ में कई डॉक्टरो से इलाज कराया लेकिन कोई फायदा नही हुआ। डॉ. साहब की आयुर्वेदिक दवा से तीन महीने में ही 95 प्रतिशत तक लाभ मिल गया है और अभी भी इलाज जारी है। अब वह सभी प्रकार का खाना भी खाने लगे है।

अन्य जटिल रोगों का उपचार जैसे शुगर, पाइल्स (बवासीर, खूनी व बादी) बालो का गिरना, माहवारी में अनियमितता, ओवरी में गांठ, गंजापन आदि का इलाज

कैंसर इलाज में डॉ. अहमद साहब का योगदान

डॉ साहब का कहना है कि किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार का कैंसर है तो अपनी रिपोर्ट ले कर प्रातः 10 बजे से 6 बजे तक क्लीनिक पर आकर मिल सकता है। डॉ. साहब रियायती दरों पर दवाएं देते है एवं अन्य किसी भी प्रकार का शुल्क नही लिया जाता है।

परामर्श निःशुल्क

रायल हर्बल क्लीनिक

केशव कॉम्प्लेक्स, लेखराज मेट्रो स्टेशन के पास, इन्दिरा नगर, लखनऊ, मोः 9984503030

समय : प्रातः 10 बजे से सायं 6 बजे तक

Divisa

NO.1 BRAND

No More CONSTIPATION!

If you are suffering from Constipation, Gas or Acidity, then use 'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.

Raju Srivastav

- CONSTIPATION
- ACIDITY
- GAS

Dr. Juneja's ®

पेट सफा

Natural Laxative Granules & Tablets

24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com

Available at all medical & general stores

नीरज कुमार मिश्रा

प्रेमजाल

"पर, तुम मुझे आज प्यार करने से क्यों रोक रही हो? आज तो हमारी सुहागरात है..." 45 साल के रमन ने अपनी नईनवेली बीवी तान्या से कहा.

तान्या सिर झुकाए बैठी रही तो एक बार फिर रमन ने अपने होंठों को उस की ओर बढ़ाया, तो वह पीछे हटते हुए बोली, "नहीं, यह सब अभी नहीं... मैं आप का साथ नहीं दे सकती."

"पर क्यों...?" रमन ने हैरान होते हुए पूछा.

"दरअसल, मुझे अभी पीर बाबा की दरगाह पर चादर चढ़ानी है. उस से पहले मैं आप के साथ जिस्मानी रिश्ता नहीं बना सकती."

"अच्छा तो ठीक है... पर कम से कम गले तो लगा लो," रमन ने अपनी बांहें फैलाते हुए कहा.

"जी नहीं, अभी कुछ भी नहीं," कहते हुए तान्या हलके से शरमा गई.

रमन की पहली बीवी केतकी की मौत एक सड़क हादसे में हो गई थी और उस की 7 साल की बेटी रिंकी के सिर में काफी चोट आई थी. बेटी की जान तो बच गई, पर सिर पर चोट लगने से उस की आवाज जाती रही.

आसपड़ोस और रिश्तेदारों ने उसे समझाया कि जो होना था हो चुका, अब अपनेआप को संभालो. तुम्हें भले ही एक बीवी की जरूरत न हो, पर तुम्हारी बेटी को अभी भी एक मां की जरूरत है, इसलिए तुम्हें जल्द से जल्द शादी कर लेनी चाहिए.

बेटी को एक मां की जरूरत है... यह बात रमन को अच्छी तरह समझ में आ गई थी, इसलिए उस ने मैट्रीमोनियल साइटों पर अपने लिए बीवी की खोज शुरू कर दी और जल्द ही उस की खोज पूरी भी हो गई, जब उसे तान्या का फोन नंबर और दूसरी जानकारी एक मैट्रीमोनियल साइट पर मिली.

रमन ने तान्या से बात की और अपने बारे में बिना कुछ छिपाए सबकुछ बता दिया. तान्या ने भी रमन को अपने बारे में जो बताया वह यह था कि उस के मांबाप बचपन में ही गुजर गए थे. मामामामी ने ही उसे पालापोसा है और इस दुनिया में वह और उस का भाई मयूर ही हैं.

रमन ने तान्या के मामामामी से मिल कर रिश्ता पक्का करने की बात कही, तो तान्या ने उसे बताया कि वे दोनों उस के छोटे भाई के साथ मलयेशिया घूमने गए हैं. हां, तान्या ने अपने भाई मयूर की बात रमन से वीडियो काल पर जरूर करा दी थी और तान्या की दास्तान सुन कर रमन को काफी अपनापन सा लगने लगा था.

कुछ दिनों के बाद तान्या ने भी शादी के लिए हां कर दी थी. रमन तान्या जैसी मौडर्न और खूबसूरत लड़की पा कर खुश था, क्योंकि तान्या रमन के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने वाली लड़की साबित हुई.

उस ने जल्द ही रमन के बिजनैस में भी दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी थी और समयसमय पर बेबाकी से रमन को अपनी राय दिया करती, जिस पर रमन अमल भी करता था.

तान्या ने रमन की मदद करने के नाम पर उस के बैंक की डिटेल और खातों के बारे में जानकारी भी ले ली थी.

एक दिन तान्या ने रमन को बताया कि उस का भाई मयूर आने वाला है, इसलिए उसे रिसीव करने बसस्टैंड जाना होगा.

तकरीबन 2 घंटे के बाद मयूर, तान्या और रमन एकसाथ बैठ कर चाय पी रहे थे. इस दौरान रमन की आंखें यह देख कर बारबार भर आ रही थीं कि अपने भाई मयूर के आने की खुशी और उस की खिदमत करने के बीच में भी तान्या उस की बेटी रिंकी का बराबर ध्यान रख रही थी.

रमन ने यह भी महसूस किया था कि तान्या और मयूर दोनों ही एकदूसरे की भावनाओं की काफी कद्र करते हैं और उन के मन में प्रेम और आदर का भाव भी है.

पहली पत्नी की मौत के बाद रमन ने औरत के शरीर का सुख नहीं जाना था और तान्या ने अब भी मन्नत के नाम पर रमन से जिस्मानी दूरी बना रखी थी. अब यह दूरी मयूर के आ जाने से और भी ज्यादा बढ़ गई थी.

एक दिन जब रमन शाम को मयूर से मिलने उस के कमरे में गया, तो रमन ने देखा कि मयूर मोबाइल फोन पर किसी लड़की से वीडियो काल कर रहा था. रमन को यह समझते देर नहीं लगी कि यह लड़की मयूर की गर्लफ्रैंड है.

रमन ने वहां से हट जाना ही उचित समझा, पर मयूर ने उसे हाथ पकड़ कर बिठा लिया. इतना ही नहीं, मयूर ने अपनी गर्लफ्रैंड से अपने जीजाजी की बात भी कराई.

वीडियो काल खत्म करने के बाद मयूर रमन से मुखातिब हुआ और पूछा, "जीजाजी, लड़की कैसी लगी?"

"बहुत सुंदर है," रमन ने कहा.

"दरअसल, एक बात मैं दीदी से कहने में हिचक रहा हूं... मेरी गर्लफ्रैंड नमिता अभी नईनई दिल्ली में आई है और उस के पास रहने के लिए कोई अच्छी और महफूज जगह नहीं है... आप कहें तो मैं उसे यहीं ले आऊं..."

"अरे... हांहां... क्यों नहीं..." मयूर ने यह बात कुछ इस अंदाज में कही थी कि रमन उसे मना नहीं कर पाया और उस ने नमिता को घर लाने की इजाजत दे दी.

मयूर नमिता को घर ले आया था. 3 कमरों के इस मकान में जहां कुछ दिनों पहले तक एक खामोशी छाई रहती थी, वहां आज कितनी चहलपहल थी. यह देख कर रमन बहुत खुश था और यही खुशी उसे अपनी बेटी रिंकी के चेहरे पर भी दिखाई देती थी, जब वह नमिता के साथ खेलती थी.

नमिता, रिंकी और तान्या एक कमरे में सोते थे, जबकि मयूर और रमन दूसरे कमरे में.

घर के कामों में तो नमिता का जवाब नहीं था. वह तान्या से भी कुशल थी. चाहे रमन को शेविंग किट देनी हो या फिर गाड़ी की चाबी, हर समय नमिता ही तैयार रहती.

रमन ने तान्या से कहा भी कि तुम से पहले मेरी आवाज तो नमिता सुन ही लेती है, इस पर तान्या सिर्फ मुसकरा कर रह गई.

रमन और नमिता के बीच नजदीकियां बढ़ रही हैं, तान्या को ऐसा ही कुछ अहसास होने लगा था.

"क्या बात है... आजकल नमिता तुम्हारे आसपास ही घूमती रहती है... कहीं कुछ दाल में काला तो नहीं है?" तान्या ने शरारती लहजे में पूछा.

"हां भई... क्यों नहीं, नमिता जैसी खूबसूरत लड़की से कौन नहीं इश्क करना चाहेगा," बदले में रमन ने भी चुटकी ली और दोनों हंसने लगे.

एक दिन रमन औफिस में काम कर रहा था कि तान्या का फोन आया, 'रिंकी की तबीयत अचानक खराब हो गई है. जल्दी से घर आ जाओ.'

रमन सारा कामकाज छोड़ कर जल्दी से घर पहुंचा, तो उस ने देखा कि रिंकी तो आराम से नमिता के साथ बैठी खेल रही थी.

"पर, मुझे तो तान्या ने फोन किया था कि रिंकी की तबीयत खराब है..." रमन ने नमिता से कहा.

"जी... और इसीलिए हम लोग रिंकी को ले कर डाक्टर को दिखा भी ले आए... एक इंजैक्शन लगा है... और तब से रिंकी को आराम भी हो गया है.

"दीदी और मयूर पास वाले मैडिकल स्टोर से दवा लाने गए हैं," नमिता ने रमन को बताया, "आप थकेथके से लगते हैं...

दिल्ली प्रैस

धार्मिक त्यौहार औरतों पर दोहरा तिहरा बोझ हैं. कामकाजी औरतों को दफ्तर, पूजापाठ, तरहतरह के व्यंजन, सजनाधजना सब करना होता है तभी पूरे परिवार का त्यौहार बनता है.

क्या ऐसे त्यौहार औरतों के लिए सजा नहीं हैं जिन में पति व पुरुष हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें. यह सवाल उठाया जाना चाहिए या नहीं या इसे जीवन पद्धति समझ कर हर कोई ढोता रहे.

हर तरह की विषम परिस्थितियों, टेढ़े सवालों, कठिन फैसलों के लिए दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं अपनी अनूठी रचनाओं से तैयार करती हैं ताकि आप सुखी, संपन्न व बराबरी का जीवन जिएं. तर्क, तथ्य, मनोरंजन और निर्भीकता से भरी पत्रिकाएं पढ़ते रहिए ताकि जिंदगी खुशहाल रहे, सफल रहे.

सरिता गृहशोभा मुक्ता सरस सलिल मनोहर सत्यकथा

circulation@delhipress.in

डिजिटल संस्करण भी उपलब्ध

बैठिए, मैं आप के लिए चाय बना कर लाती हूं," यह कह कर नमिता चाय बनाने चली गई.

नमिता चाय ले आई थी. चाय पीते ही रमन को नींद सी आने लगी और वह सोफे पर ढेर हो गया. वह कितनी देर सोया होगा, उसे कुछ होश नहीं था, पर जब उस की आंख खुली तो उस के शरीर के सभी कपड़े गायब थे और नमिता भी तकरीबन बिना कपड़ों के बैठी हुई रो रही थी. दूसरी तरफ मयूर बैठा हुआ था.

"यह सब क्या है नमिता?" रमन ने परेशान होते हुए पूछा.

"मेरी इज्जत लूटने के बाद यह सवाल करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती..." नमिता की आंखों में शोले उबल रहे थे.

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"मतलब साफ है जीजाजी. आप ने नमिता को अकेला पा कर उस की इज्जत लूट ली है और यह रहा इस का सुबूत," यह कह कर मयूर ने अपना मोबाइल फोन रमन की आंखों के सामने घुमाया, तो उसे देख कर रमन की आंखों के सामने अंधेरा छा गया.

मोबाइल फोन की तसवीरों में रमन नमिता पर छाया हुआ नजर आ रहा था. कुछ इसी तरह की और भी तसवीरें थीं, जिन से साफ हो रहा था कि नमिता का रेप रमन ने किया है.

"अब हम क्या करेंगे... किस को मुंह दिखाएंगे... मैं दीदी और रिंकी को बुला कर लाता हूं. और ये तसवीरें सोशल मीडिया पर डाल देता हूं, ताकि आप की सचाई सब को पता चल सके," गुस्से में भरा मयूर बाहर की ओर लपका, तो रमन ने मयूर को पकड़ लिया, "नहींनहीं, बाहर किसी को यह सब मत बताओ..."

पर मयूर तो गुस्से से उबल रहा था. वह नमिता को इंसाफ दिलाने की बात करने लगा. रमन को अपनी बदनामी का डर सताने लगा था.

रमन का मन तो एक पिता का था, पर दिमाग एक बिजनैसमैन का था, इसलिए उस ने जल्दी ही मयूर से विनती की कि वह यह बात तान्या और रिंकी से न कहे और न ही तसवीरें सोशल मीडिया पर डाले.

मयूर तो इसी ताक में था. उस ने कहा कि नमिता को इस घटना से बहुत सदमा लगा है. उस का इलाज कराने के नाम पर उस ने 30 लाख रुपए की मांग कर दी.

"पर, ये तो बहुत ज्यादा हैं?" रमन बोला.

"आप की इज्जत से ज्यादा तो नहीं..." मयूर ने कहा.

"पर, वादा करो कि ये तसवीरें तुम तान्या को नहीं दिखाओगे..." रमन ने कहा.

"आप के सामने ही डिलीट कर देंगे और हम यहां से चले भी जाएंगे, पर पैसा मिलने के बाद," मयूर बोला.

रमन तुरंत ही पैसों का इंतजाम करने में जुट गया और मयूर के खाते में पैसे ट्रांसफर करते ही उस से तसवीरों को डिलीट करने को कहा.

मयूर ने भी उन तसवीरों को उसी के सामने डिलीट कर दिया.

हालांकि रमन के काफी पैसे इस डील में चले गए थे, फिर भी उसे इस बात की तसल्ली थी कि कम से कम उस की बीवी और बेटी को इस कांड की भनक नहीं लगी थी.

मयूर और नमिता रमन के घर से जा चुके थे और घर की रौनक फिर से लौट आई थी. तान्या अब भी रिंकी का ध्यान रख रही थी, यह देख कर रमन को सुकून मिला था.

खाना खा कर रमन जल्दी ही सो गया था, पर रात में प्यास लगने के चलते अचानक उस की आंख खुली. रसोईघर में जाते समय उस के कानों में आवाज पड़ी. यह तान्या के हंसने की आवाज थी.

तान्या फोन पर बोल रही थी, "तुम चिंता मत करो नमिता, अभी तो सिर्फ तुम ने ही 30 लाख रुपए झटके हैं इस रमन नाम के बेवकूफ आदमी से, अभी देखो, मैं भी ड्रामा फैला कर इसे और ठगती हूं और फिर तेरे बदन की गरमी भी तो मुझे बहुत दिन से नहीं मिली है, जब तुझ से मिलूंगी तो सारी कसर निकाल लूंगी..."

ये बातें सुन कर रमन सन्न रह गया था. उसे समझते देर नहीं लगी कि वह भयंकर ठगी का शिकार हो गया है.

पर रमन के पास इन सब बातों के लिए कोई सुबूत नहीं था और अगर वह तान्या से कुछ कहता तो मामला बिगड़ सकता था, इसलिए वह मन ही मन उस से निबटने का प्लान बनाने लगा.

अगले दिन जब तान्या बाथरूम में नहाने के लिए घुसी, उसी समय रमन ने तान्या का लैपटौप खोला और उस की छानबीन करने लगा. लैपटौप को खंगालना आसान नहीं था, पर फिर भी रमन को

काफी जानकारी मिल गई, जिस से यह पता चल गया कि तान्या, नमिता और मयूर का एक गैंग है, जो विधुर, बड़ी उम्र के पैसे वालों और कुंआरे लड़कों को मैट्रीमोनियल साइट पर खोज कर उन से मेलजोल बढ़ाते हैं और फिर मयूर, नमिता और तान्या ठीक उसी तरह से लोगों को भी ठगते हैं, जिस तरह से उन्होंने रमन को ठगा था.

लैपटौप पर नमिता और तान्या के कुछ ऐसे वीडियो थे, जिन से यह पता चलता था कि वे दोनों समलैंगिक हैं.

"तो इसीलिए तान्या को मेरे साथ सैक्स करने से परहेज था," कहते हुए रमन का माथा ठनक गया था.

रमन ने इन सारी चीजों की जानकारी पुलिस को दे दी, जिस पर पुलिस ने अपनी तफतीश भी शुरू कर दी थी.

फिर अचानक एक दिन जैसे ज्वालामुखी फटने का नाटक शुरू कर दिया तान्या ने... उस ने मोबाइल फोन पर रमन और नमिता की वही तसवीरें उसे दिखाईं और बोली, "आप जैसे मर्दों को, जो दूसरी लड़कियों को देख कर लार गिराते हैं, मैं अच्छी तरह जानती हूं... रेप कर दिया आप ने इस बेचारी का, तभी तो मयूर और नमिता रातोंरात मुझ से बिना मिले ही चले गए.

"क्या होगा अगर रिंकी को यह सब पता चल जाए तो... ? मुझे आज ही तुम से तलाक चाहिए," तान्या की आवाज ऊंची होती जा रही थी.

"रिंकी को कुछ मत बताना, नहीं तो वह मेरे बारे में क्या सोचेगी... मैं तुम्हें तलाक दे दूंगा," रमन ने गिड़गिड़ाने की ऐक्टिंग की.

"ठीक है, मैं अपने वकील से तुम्हारी बात कराती हूं. वह तुम्हें तलाक का सारा खर्चा बता देगा," यह कह कर तान्या ने अपने वकील का नंबर डायल किया.

वकील ने रमन को समझाया कि अपनी बीवी को तलाक देने में उस का बहुत पैसा खर्च हो जाएगा, क्योंकि सारे सुबूत उस के खिलाफ हैं और फिर गुजारा भत्ता भी देना होगा, इसलिए बेहतर है कि वह कोर्ट के बाहर ही तान्या से समझौता कर ले.

वकील की आवाज सुन कर रमन यह जान गया था कि फोन पर कोई वकील नहीं, बल्कि अपनी आवाज को बदल कर मयूर ही बोल रहा था.

रमन ने तान्या से कोर्ट के बाहर समझौता करने की बात कही, तो तान्या ने पूरे 5 लाख रुपए ले कर मामला रफादफा करने की बात कह दी.

"ठीक है, तुम मुझे आजाद कर दो, मैं तुम्हें 5 लाख रुपए दे दूंगा... पर रिंकी को कुछ मत बताना," रमन ने कहा.

रमन कमरे में आ कर सोने का नाटक करने लगा, पर नींद उस की आंखों से कोसों दूर थी. वह किसी भी तरह से इस गैंग का परदाफाश करना चाहता था, पर इस शातिर गैंग से कैसे पार पाता है, इसी के तानेबाने में रमन रातभर डूबा रहा.

अगली सुबह रमन ने तान्या को अपने साथ बाहर चलने को कहा और सीधा आर्य समाज मंदिर ले आया, जहां पर नमिता एक लड़के के साथ शादी रचाने जा रही थी. रमन ने तान्या का हाथ मजबूती से पकड़ा हुआ था, ताकि वह वहां से भाग न सके.

"अरे दोस्त, इस दुलहन से तुम किसी मैट्रीमोनियल साइट पर मिले होगे ?" रमन ने दूल्हे से सीधा सवाल किया.

"पर, आप कौन हैं और ऐसा क्यों पूछ रहे हैं ?" उस लड़के ने पूछा.

"मैं कौन हूं, यह खास बात नहीं है, बल्कि इस समय तुम्हारा यह जानना जरूरी है कि तुम इस समय एक ठग दुलहन के गैंग के शिकंजे में फंसने वाले हो..." कहते हुए रमन ने आपबीती सुनानी शुरू कर दी, "ये लड़कियां, जो असल में लैस्बियन हैं, इस मयूर नाम के लड़के के साथ मिल कर मैट्रीमोनियल साइट पर मौजूद मर्दों से शादी कर के उन्हें अपना शिकार बनाती हैं, पति पर रेप करने का आरोप लगाती हैं, उसे बेहोश कर के उस का फर्जी वीडियो बना कर ब्लैकमेल करती हैं..."

रमन बोले जा रहा था, जबकि अपनी पोल खुलते देख कर मयूर, तान्या और नमिता ने वहां से भागने की कोशिश की.

रमन द्वारा बुलाए जाने के चलते वहां पहले से ही मौजूद पुलिस ने उन तीनों को गिरफ्तार कर लिया और सख्ती से पूछताछ पर उन्होंने अपना गुनाह भी कबूल कर लिया.

रमन ने अपने साथ हुई ठगी को सोशल मीडिया और लोकल अखबारों में भी छपवाया, ताकि लोग ठगी और ब्लैकमेलिंग के इस तरह के फर्जी प्रेमजाल से बच सकें. ●

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO.1 BRAND INDIA 2014

1 ज्योतिष्मती तेल
जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

2 गन्धपुरा तेल
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

3 निर्गुण्डी तेल
नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

4 तारपीन तेल
जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

5 पुदीना तेल
पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

6 कपूर तेल
विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

7 अलसी तेल
जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

8 तिल तेल
मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drarthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

परिंदे प्यार के

प्रेम बजाज

अब्दुल आज पहली बार कालेज जा रहा है, इसलिए थोड़ा सा नर्वस था.

"यार, क्या हुआ? तू तो लड़कियों के जैसे कर रहा है... इतना क्यों घबरा रहा है?" हामिद ने पूछा.

"यार, पता नहीं मुझे घबराहट क्यों हो रही है, वहां इतनी सारी लड़कियां होंगी न..."

"तो...? लड़कियां तुझे खा जाएंगी क्या...? चल, अब चलें. देर हो रही है."

वे दोनों जैसे ही कालेज में ऐंटर हुए कि सामने से कुरतीसलवार पहने, दुपट्टा ओढ़े एक लड़की आई, जिस के लंबेघने बाल, गोराचिट्टा रंग, बड़ीबड़ी आंखों में काजल, चांद जैसे मुखड़े पर छोटा सा काला तिल था और अचानक से वह अब्दुल से टकरा गई. अब्दुल के हाथ से किताबें गिर गईं.

"ओह, सौरी. दरअसल, मैं जल्दी में थी. शायद बस से उतरते समय मेरा पर्स कहीं गिर गया, वही ढूंढ़ने जा रही हूं," वह लड़की हड़बड़ाहट में बोली.

हामिद ने धीरे से कहा, "जी मोहतरमा, कहीं यह तो नहीं है... मुझे यह कालेज के गेट पर पड़ा मिला था. मैं ने उठा लिया और सोचा कि अंदर औफिस में जमा करा दूंगा, जिस का भी होगा खुद ले जाएगा."

"जीजी, यही है..." पर्स लेते हुए वह लड़की बोली, "थैंक्स मिस्टर..."

"हामिद नाम है मेरा और यह मेरा दोस्त है... अब्दुल."

"हामिदजी, अब्दुलजी... आप दोनों का शुक्रिया," वह लड़की बोली.

"आप पर्स चैक कर लीजिए," अब्दुल ने कहा.

"इस की कोई जरूरत नहीं. इस में पैसे तो थे ही नहीं."

"पैसे नहीं थे... फिर क्या आप एक खाली पर्स के लिए इतनी परेशान हो रही थीं?"

"किसी की निशानी है, इसलिए... बहुत सी यादें जुड़ी हैं इस पर्स के साथ."

अब्दुल ने कहा, "लगता है कि कोई बहुत ही खास शख्स है, जिस की यादें इस पर्स से जुड़ी हैं. मिस, क्या मैं आप का नाम जान सकता हूं?"

अचानक अब्दुल को इतना ज्यादा बोलता देख कर हामिद हैरान रह गया कि जो लड़का आज

लड़कियों के नाम से घबरा रहा था, वह बेतकल्लुफ हो कर इस लड़की से बात कर रहा था.

"जी हां, बहुत ही खास. वैसे, सब मुझे खुशी कहते हैं," इतना कह कर वह लड़की चली गई.

अब्दुल उसे जाते हुए देखता रह गया.

"अमा यार अब्दुल, अब चलो भी... क्लास का समय हो गया है," हामिद ने कहा.

"यह क्या..." अब्दुल ने क्लास में जा कर देखा, तो खुशी वहीं नजर आई.

"हामिद भाई, मुझे कुछ हो गया है, जो हर जगह मुझे खुशी ही नजर आ रही है," अब्दुल ने कहा.

"यार, यह तेरा वहम नहीं है, सच है. खुशी भी इसी क्लास में पढ़ती है."

यह सुन कर तो अब्दुल को जैसे मुंहमांगी मुराद मिल गई. वह खुशी के साथ बैंच पर बैठ गया.

हामिद अब्दुल के बरताव पर हैरान था. वह हर पल खुशी से या खुशी के बारे में ही बात करता था. खुशी भी अब्दुल की बातों से प्रभावित होती थी.

वे दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे. साथ में बैठना, साथ में खाना, बस हर समय मन कहता कि दोनों साथ रहें, अकसर फोन पर भी काफी देर तक बातें करते रहते.

"अब्दुल, क्या हुआ रे तुझे, तू आजकल बाकी सब से कटाकटा सा रहता है, बस खुशी का ही नाम रटता है... लगता है कि तुझे प्यार हो गया है," हामिद ने कहा.

"अमा हामिद, कैसी बात करते हो... प्यार और मैं... यह प्यार किस परिंदे का नाम है, मुझे तो यह भी नहीं मालूम," अब्दुल बोला.

इधर खुशी की सहेलियां उसे छेड़तीं कि तुझे अब्दुल से प्यार हो गया है.

"हां शायद, मुझे भी ऐसा ही लगता है. उसे न देखूं तो मुझे चैन नहीं आता है," खुशी भी बोली.

फरवरी का महीना था. 2 दिन बाद वैलेंटाइन डे था. खुशी ने सोचा कि शायद अब्दुल उसे अपना वैलेंटाइन बनाएगा, लेकिन जब अब्दुल ने कुछ नहीं कहा, तो खुशी ने ही उसे लाल गुलाब दे दिया और बोली, "अब्दुल, आई लव यू."

"खुशी, मैं भी तुम्हें बहुत ज्यादा मुहब्बत करता हूं, लेकिन अभी मुझे आगे पढ़ना है और अपने अब्बा का सपना पूरा करना है."

"लेकिन, क्या तुम्हारे घर वाले इस शादी के लिए मान जाएंगे? और क्या तुम मेरा इंतजार करोगी?

"वैसे, मैं ने अपने अम्मीअब्बू को सब बता दिया है. उन्हें कोई एतराज नहीं है."

"मेरे मम्मीपापा भी नए खयालात के हैं, उन्हें इस रिश्ते से कोई एतराज नहीं होगा," खुशी ने कहा.

उस दिन खुशी और अब्दुल बहुत खुश थे. मनचाही मुराद जो मिल गई थी. घूमतेफिरते शाम ढल गई. अचानक से बहुत जोरों से बारिश होने लगी. कोई बस भी नहीं रुक रही थी.

वे दोनों भीगतेभागते पैदल चलते जा रहे थे कि जहां कोई सवारी मिलेगी तो चढ़ जाएंगे, लेकिन कहीं कुछ नहीं रुक रहा था. वे बुरी तरह से थके हुए थे, उस पर भूख और बारिश से भीगने के चलते उन्हें ठंड महसूस हो रही थी.

रास्ते में एक गैस्ट हाउस नजर आया. वे थोड़ी देर वहीं रुके. कमरे में अकेले, जवानी का जोश, बारिश ने भी आग लगा दी थी, लिहाजा वे रोक नहीं पाए खुद को. एक तूफान आया और बहा दिया सबकुछ, छीन लिया दोनों का कुंआरापन.

खैर, जो होना था हो चुका था. उन दोनों ने अपनेअपने घर में पहले से बताया हुआ था कि वे शादी करना चाहते हैं. दोनों के घर वाले राजी थे.

अचानक कुछ दिनों बाद एक महामारी आई कोरोना, जिस में हिंदूमुसलिम जमात के बीच दंगेफसाद हुए, एकदूजे पर तलवार, गोली, पत्थर चले. सब का प्यार नफरत में बदल गया.

अब्दुल चीख रहा था, "अब्बा, उन्हें मत मारिए, वे खुशी के परिवार वाले हैं. खुशी आप की होने वाली बहू है... कुछ तो सोचिए."

उधर खुशी चिल्ला रही थी, "पापा, अब्दुल मेरा प्यार है. आप उस के परिवार को कैसे मार सकते हैं..."

लेकिन कोई उन दोनों की नहीं सुन रहा था. सब के नए खयालात पीछे छूट गए थे, बस नजर आ रहा था तो केवल हिंदू या मुसलिम.

वे दोनों सब को मना करते हुए, समझातेसमझाते बीच में आ गए और मारे गए. अब दोनों परिवार अपने बच्चों की लाशें देख कर रो रहे थे, अपनेआप को धिक्कार रहे थे कि हिंदूमुसलिम के झगड़े में प्यार के 2 परिंदे उड़ गए, छोड़ गए यह मतलबी दुनिया.

अब वे दोनों आसमान में आजाद परिंदे बन कर उड़ेंगे, जहां न कोई हिंदू होगा, न मुसलिम, बस प्यार ही प्यार होगा. ●

आयुर्वेद से आयुष्यमान

रतन्स आयुर्वेदिक समाधान

प्र. मेरी समस्या यह है कि मेरे सभी दोस्त अच्छे-खासे हैं पर मेरा शारीरिक विकास औसत ही है। योग्य सलाह दें। -सलीम, हाजीपुर.

उ. हमारा शारीरिक विकास अनुवंशिकता पर निर्भर करता है। फिर भी आप चाहें तो पाचन क्रिया ठीक कर ग्रंथियों को सक्रिय करने हेतु ***'हाईटॉप'*** सिरप नियमित रूप से सेवन कर सकते हैं। रस्सी कूद अथवा योगासन करें।

प्र. मेरे बाल पतले होते जा रहे हैं। बालों को स्वस्थ बनाने के लिए आयुर्वेदिक तेल या कोई उपाय सुझाएं। -ललिता, बेहरामपुर.

उ. बालों को पोषण प्रदान करने के लिए आप हर्बल गुणों से युक्त ***'केश वरदान'*** हेयर रिवाइटलाइजर तेल नियमित रूप से प्रयोग कर सकते हैं साथ ही बालों की सफाई के लिए ***'सतरीठा'*** प्लस शैम्पू प्रयोग कर सकते हैं।

प्र. मेरी आयु २२ वर्ष है। मैं अपना व्यक्तित्व प्रभावशाली बनाना चाहता हूं, मेरी शरीर प्रकृति बहुत कमज़ोर है। कृपया कोई प्रभावी उपचार सुझाएं। -गौरव, बेंगलुरू.

उ. आप अत्यंत प्रभावी आयुर्वेदिक पुष्टिवर्धक औषधि तत्वों से युक्त ***'वेटलिफ्टर'*** मॉल्ट १-१ चम्मच सुबह-शाम एक गिलास दूध के साथ नियमित तीन माह तक सेवन कर सकते हैं। साथ ही पौष्टिक आहार लें।

प्र. मेरी आयु २८ वर्ष है। मुझे शरीर में आकर्षण की कमी महसूस होती है, समस्या के लिए उचित उपाय बताएं। -एक पाठिका, पाटण.

उ. उपरोक्त समस्या के लिए ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर कैप्सूल्स दूध के साथ दिन में तीन बार सेवन कर सकते हैं एवं ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर जैल से रोज़ दो बार मालिश कर सकते हैं।

प्र. मैं २९ वर्षीय हूं, मेरे चेहरे की त्वचा में दमक नहीं है। समस्या के लिए केवल हर्बल उपचार सुझाएं। -आर. कमला, खम्माम.

उ. त्वचा में निखार लाने के लिए आप संतरे के छिलकों के चूर्ण में गुलाब जल मिलाकर हल्के हाथों से चेहरे पर मलें। साथ ही दिन में दो बार चेहरे पर वर्ण्य तत्वों से युक्त हर्बल ***'सुगंधा वर्णनिखार क्रीम'*** लगा सकते हैं।

प्र. पहले मेरी स्कीन ग्लो करती थी पर अब स्कीन में रूखापन व रफनेस आने लगा है, मैं हमेशा फेशियल करने का खर्चा नहीं कर सकती, क्या करूं? उचित उपाय बताएं। -सुधा, कोलकाता.

उ. फेशियल के लिए अधिक समय व खर्च को कम करने और रोज फेशियल जैसा ग्लो पाने के लिए बहुमूल्य जड़ी-बूटियों केसर, चंदन, ऐलोवेरा एवं कपूर के गुणों से युक्त ***'फेशिया'*** फेशियल बार अत्यंत ही उपयोगी है। जिसका मुलायम, हाइड्रेटिंग व झागदार क्लींज़र त्वचा में गहराई से समाकर त्वचा की गुणवत्ता को बनाए रखता है और फेशियल सा ग्लो देता है।

प्र. मेरा बेटा बिस्तर पर पेशाब करने की समस्या से ग्रस्त है। आयुर्वेदिक उपचार सुझाएं। -एक पाठक, जबलपुर.

उ. समस्या हेतु आप उन्हें आयुर्वेदिक ***'बेडवेट'*** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार नियमित सेवन करवा सकते हैं। यूरीनरी इंफेक्शन की जांच करवाएं।

प्र. मेरी उम्र ३८ वर्ष है, मैं पिछले दो सालों से एक्जिमा से परेशान हूं। कृपया समस्या के लिए कोई आयुर्वेदिक उपाय बताएं। -आर.एस. श्रीवास्तव, देहरादून.

उ. उपरोक्त समस्या के लिए आप आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से युक्त रतन का ***'एक्ज़ोलीन'*** मल्हम दिन में दो बार नियमित रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

उपरोक्त सलाह रोगियों के लक्षणों को ध्यान में रखकर दी गई है. दवाओं का प्रयोग वैद्यकीय मार्गदर्शन में करें.

अहिल्या

वंदना सोलंकी

रज्जो गांव की सीधीसादी, अल्हड़, पर बेहद खूबसूरत लड़की थी. उम्र यही कोई 18 या 19 साल रही होगी.

2 साल पहले उस के मांबाप की एक हादसे में मौत हो गई थी. उस के बाद भैयाभाभी ने उस की शादी रमेश से करा दी और अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लिया. तब तक वह 12वीं जमात तक ही पढ़ पाई थी.

रमेश तकरीबन 25 साल का नौजवान था, जो फौज में तैनात था. इस समय उस की पोस्टिंग पुणे में थी.

शादी के समय रमेश को 15 दिन की छुट्टी मिली थी. तब से वह अब घर आया था और इस बार अपनी नई ब्याहता पत्नी रज्जो को साथ ले जा रहा था.

पति के साथ रेल के एयरकंडीशन डब्बे में बैठी रज्जो बहुत रोमांचित हो रही थी. वह पहली बार ऐसे ठंडे डब्बे में सफर कर रही थी, वह भी अपने नएनवेले पति के साथ.

खिड़की के पास बैठी रज्जो भविष्य के सपने बुनने में इतनी तल्लीन थी कि उस का पति रमेश कब उस की बगल में आ कर बैठ गया, इस बात का उसे भान ही नहीं रहा.

जब रमेश ने रज्जो को कुहनी मार कर छेड़ा, तब वह वर्तमान के धरातल पर आई. उस ने प्यार से अपने पति को मुसकरा कर देखा और उस के कंधे पर सिर टिका दिया.

रमेश की बर्थ रज्जो की बर्थ के ऊपर की थी. सामने की सीट पर एक नौजवान बैठा था, जो अजीब सी नजरों से रज्जो को घूरे जा रहा था. उस की गहरी नीली आंखें मानो रज्जो के शरीर के अंदर तक का मुआयना कर रही थीं.

रज्जो इस बात से असहज महसूस कर रही थी. उस नौजवान की उम्र भी रमेश के बराबर ही रही होगी.

रमेश ने उस से अपने साथ सीट बदलने का आग्रह किया, तो उस ने बताया कि यह उस की सीट नहीं है, बल्कि उस की सीट ऊपर की है.

रमेश ने सोचा कि इस सीट पर जो भी आएगा, तब वह उस से सीट बदलने की बात कर लेगा.

उन का आपस में परिचय हुआ. वह नौजवान एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता था. उस की पोस्टिंग नवी मुंबई में थी. वह दिल्ली से किसी शादी समारोह से लौट रहा था. अभी उस की छुट्टियां बाकी थीं, तो वह अपनी बहन के पास पुणे जा रहा था.

रमेश उस के साथ बातों में मशगूल था, पर रज्जो को यह अच्छा नहीं लग रहा था. वह पति के साथ ढेर सारी बातें करना चाहती थी, पर यह कबाब में हड्डी बन कर उस की सारी उम्मीदों पर पानी फेर रहा था.

जब रज्जो से रहा नहीं गया, तो वह बोली, "सुनिए, मुझे तो बहुत भूख लगी है... खाना निकालूं?"

रमेश के हां कहते ही रज्जो खाना निकालने लगी, तो सामने वाला नौजवान, जिस का नाम विपिन था, वहां से उठ कर जाने लगा. रमेश ने उसे भी खाने के लिए पूछा, तो थोड़ी नानुकर के बाद वह मान गया.

खाना खाने के बाद शुक्रिया कह कर विपिन ऊपर अपनी सीट पर चला गया.

रमेश अब रज्जो के साथ सट कर बैठ गया और धीरेधीरे प्यारभरी बातें करने लगा. रज्जो का चेहरा शर्म से लाल हो रहा था.

डब्बा तकरीबन खाली सा ही था. अमावस की रात थी और बाहर घनघोर अंधकार छाया था.

दीनदुनिया से बेखबर पतिपत्नी का जोड़ा अपनी प्यार की दुनिया में खोया था, इस बात से अनजान कि 2 आंखें लगातार उन पर नजरें जमाए हुए थीं.

रमेश ने रज्जो के कान में धीमे से फुसफुसाते हुए कहा कि थोड़ी देर बाद सब के सो जाने पर वह उस की सीट पर आ जाएगा.

यह सुन कर रज्जो के दिल की धड़कनें तेज हो गईं और पलकें खुद ही झुक गईं, पर अचानक उसे लगा कि कोई उन्हें घूर रहा है. उस की नजर ऊपर गई, तो उस ने देखा कि विपिन उसे अपलक देखे जा रहा था.

तभी विपिन ने रमेश को कौफी के लिए पूछा, तो रमेश ने हां में सिर हिला दिया. रज्जो ने पहले तो आनाकानी की, पर रमेश के कहने पर 2-4 घूंट कौफी पी कर डिस्पोजेबल कप सीट के नीचे सरका दिया, फिर बत्ती बुझा कर लेट गई.

रमेश और विपिन सामने की सीट पर बैठ कर बातें करते हुए कौफी पीने लगे.

काफी ठंड थी, तो रमेश ने बैग से मंकी कैप निकाल कर पहन ली. अगला स्टेशन आने पर एक बुजुर्ग औरत उस डब्बे में आ गईं. उन की सामने वाली बर्थ थी.

सुनहरे भविष्य के सपनों के झूले में झूलती रज्जो को कब नींद ने अपने आगोश में ले लिया, उसे पता ही नहीं चला.

अचानक नींद में रज्जो को महसूस हुआ, जैसे किसी ने उसे अपनी बांहों में भर लिया हो.

कुनमुनाती हुई रज्जो ने जान लिया कि यह रमेश है, तो उस ने खिसक कर उस के लिए जगह बना दी.

प्यार की खुमारी तो छाई ही थी दोनों पर, लिहाजा बिना किसी तीसरे की परवाह किए वे एकदूजे में समा गए.

थोड़ी देर बाद रमेश ऊपर अपनी सीट पर सोने चला गया. रज्जो फिर गहरी नींद सो गई.

कुछ घंटों के बाद फिर रज्जो की नींद में खलल पड़ा. रज्जो ने कहा, "अरे, अभी तो... हद है, फिर से..." पर रमेश ने उस का मुंह बंद कर दिया.

रज्जो ने आनाकानी की, पर रमेश पर प्यार का रंग छाया था, लिहाजा रज्जो भी लता सी उस के आगोश में सिमट गई.

सुबह होतेहोते उन की मंजिल आ गई थी. जल्दीजल्दी सामान समेट कर वे दोनों उतर गए, विपिन पता नहीं कब उतर गया था.

अपने नए आशियाने में आ कर रज्जो बेहद खुश थी. वह जल्द ही अपनी घरगृहस्थी में रम गई. उस ने रमेश के सामने आगे पढ़ाई करने की इच्छा जाहिर की, तो वह मान गया.

रज्जो ने एक अस्पताल में नर्सिंग की ट्रेनिंग के लिए दाखिला ले लिया और बड़ी लगन से पढ़ाई करने लगी.

आजकल रमेश अपने काम में बहुत बिजी हो गया था. वह देर रात को थकाहारा आता और सो जाता. कभीकभी रात की ड्यूटी भी रहती थी. इस से उन की शादीशुदा जिंदगी में पहले जैसा प्यार अब कहीं नजर नहीं आता था.

रेल की घटना याद कर के रज्जो को गुदगुदी हो जाती थी. उन पलों को याद कर के उस का रोमरोम खिल जाता था.

एक रात बात करते हुए रज्जो ने रमेश से यों ही पूछ लिया, "ऐजी, आजकल आप को क्या हो गया है कि कभी दो घड़ी मेरे पास नहीं बैठते? आप के मुंह से प्यार के दो बोल सुनने को तरस जाती हूं मैं. उस दिन रेल में तो..." कहतेकहते उस के गोरे गाल लाल हो गए.

"क्या हुआ था रेल में..."

"अरे, उस दिन तो आप के प्यार का रंग ही नहीं उतर रहा था. लाजशर्म सब छोड़ कर एक ही रात में 2 बार.."

"क्याक्या सोचती रहती हो रज्जो तुम भी..." शायद रमेश ने ठीक से रज्जो की बातों पर ध्यान नहीं दिया था. वह बस इतना ही बोला था, "तब नईनई शादी हुई थी यार. इतने दिनों के बाद हम मिले थे. नहीं रहा गया मुझ से.

"वैसे मैडम, मैं ने एक ही बार जगाया था तुम्हें. तुम ने जरूर कोई सपना देखा होगा. हर समय सपनों की दुनिया में जो रहती हो, फिर उसे सच मान लेती हो."

रज्जो लाज से मुसकरा दी, पर कुछ सोच में पड़ गई. फिर इस खयाल को महज खयाल समझ कर झटक दिया कि शायद वह सपना ही होगा.

आज रज्जो कुछ अनमनी सी थी. तबीयत भी ठीक नहीं लग रही थी. बिस्तर से उठी तो चक्कर आ गया.

डाक्टर को दिखाया, तो उस ने जांच कर के बताया कि रज्जो पेट से है.

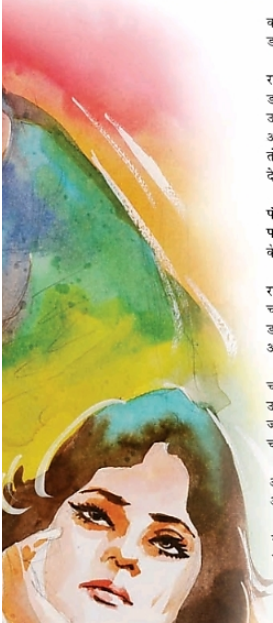

रमेश तो खुशी से उछल पड़ा.

15 दिन बाद अल्ट्रासाउंड की रिपोर्ट में पता चला कि रज्जो जुड़वां बच्चों की मां बनने वाली है. अब तो खुशी दोगुनी हो गई थी.

रमेश ने रज्जो की देखभाल के लिए गांव से अपनी बहन कीर्ति को बुला लिया था.

तय समय पर रज्जो ने 2 बेटों को जन्म दिया. घर खुशियों से और बच्चों की किलकारियों से भर गया.

बच्चे बड़े होने लगे थे. बच्चों के दादाजी ने नाम रखे रघु और राघव. जुड़वां होने के बावजूद दोनों बच्चे एकदम अलग थे, देखने में भी और आदतों में भी.

रघु थोड़ा शांत, गंभीर स्वभाव का सेहतमंद बालक था, वहीं राघव चंचल और शरारती बच्चा था. वह थोड़ा दुबलापतला सा था और जल्दी बीमार पड़ जाता था. उस की नीली आंखें सब को अपनी तरफ करती थीं, पर रज्जो को डराती थीं.

इस तरह 3 साल बीत गए. एक बार राघव गंभीर रूप से बीमार पड़ गया. डाक्टर ने बताया कि खून चढ़ाना पड़ेगा. उस का ब्लड ग्रुप बी नैगेटिव निकला. अस्पताल में इस ग्रुप का खून नहीं था, तो मातापिता या दूसरे घर वालों को खून देने के लिए बुलाया गया.

रज्जो और रमेश का ब्लड ग्रुप ए पौजिटिव और बी पौजिटिव था. बाकी परिवार में भी किसी का ब्लड ग्रुप राघव के खून से मेल नहीं खा रहा था.

राघव की हालत बहुत नाजुक थी. रमेश किसी दूसरी जगह से खून लाने चला गया. रज्जो राघव के पास बैठी थी. डाक्टर ने उस ब्लड ग्रुप के बारे में अस्पताल में भी अनाउंस कर दिया था.

तभी एक आदमी तेजतेज कदमों से चलता हुआ आया और उस ने कहा कि उस का ब्लड ग्रुप बच्चे से मेल खाता है. जल्दी से उस का खून ले कर बच्चे को चढ़ाया गया.

यह तो रेल वाला विपिन था, जो अपने किसी जानपहचान वाले मरीज को अस्पताल देखने आया था.

नीली आंखों वाले विपिन को देख कर रज्जो का दिल मानो उछल कर बाहर आने को तैयार हो गया था. वह वहीं बेहोश हो कर गिर पड़ी.

जब रज्जो को होश आया, तब वह अस्पताल में बिस्तर पर लेटी थी. उस ने चारों ओर नजर घुमाई. रमेश, उस का बेटा रघु और मांजी बिस्तर के पास खड़े थे.

रज्जो और राघव की तबीयत देखते हुए रमेश ने अपनी मां को भी गांव से बुला लिया था.

नन्हा रघु रोनी सूरत लिए अपनी मां के पास आने को मचल रहा था. रज्जो ने उसे गोद में ले कर खूब प्यार किया, उस ने विपिन से मिलने की इच्छा जताई, जिस से कि उसे शुक्रिया कह सके, तो नर्स ने बताया कि वह तो जा चुका है, पर अपना विजिटिंग कार्ड छोड़ गया है.

रज्जो की तबीयत दिन ब दिन खराब रहने लगी थी. डाक्टर भी हैरान थे कि क्यों उस का ब्लड प्रैशर लगातार ऊपरनीचे हो रहा था?

कुछ दिनों में राघव की तबीयत ठीक हो गई, तो उसे डिस्चार्ज कर दिया गया. रज्जो भी जिद कर के घर आ गई. थोड़ा ठीक होने के बाद उस ने उसी अस्पताल में नर्स की नौकरी कर ली.

एक दिन रज्जो ने अस्पताल की सीनियर डाक्टर शालिनी से पूछा, "एक बात बताइए डाक्टर, क्या एक ही मां की कोख से पैदा हुए जुड़वां बच्चों के 2 पिता हो सकते हैं?"

डाक्टर शालिनी ने बताया, "बहुत ही रेयर केस में ऐसा होने की संभावना हो सकती है. जैसे एक ही समय में अनेक मर्दों के साथ किसी औरत ने संबंध बनाए हों या कोई लड़की या फिर औरत सामूहिक बलात्कार की शिकार हुई हो, तभी यह मुमकिन हो सकता है. पर तुम क्यों पूछ रही हो यह सब?"

रज्जो ने कहा, "मैं ने कहीं पढ़ा था. मुझे ऐसी अनहोनी पर यकीन नहीं हो रहा था, इसलिए आप से पूछा."

डाक्टर शालिनी ने कहा कि बहुत सी ऐसी अनहोनी और रहस्यमयी बातें होती हैं, जिन का जवाब विज्ञान के पास भी नहीं है.

डाक्टर शालिनी की बात सुन कर रज्जो का चेहरा सफेद पड़ गया, पर उस ने किसी तरह खुद को संभाला और 15 दिन की छुट्टी ले कर घर आ गई. सासू मां भी गांव चली गई थीं. कीर्ति ही बच्चों का खयाल रखती थी.

रज्जो खुद से नजरें नहीं मिला पा रही थी. वह अंदर ही अंदर घुट रही थी. इस से उस की तबीयत बिगड़ने लगी थी.

रमेश रज्जो को अस्पताल ले गया. डाक्टर शालिनी रज्जो की ऐसी हालत देख कर हैरान रह गईं. उन्होंने उस की ऐसी हालत की वजह पूछी, तो रमेश ने बताया, "पता नहीं, वह क्याक्या सोचती रहती है? न किसी से बात करती है और न किसी से मिलतीजुलती है. अपनेआप को बस घर में कैद कर के रखती है. इसे बच्चों का भी खयाल नहीं है."

डाक्टर शालिनी ने चैकअप के बहाने रमेश को बाहर भेज दिया, फिर रज्जो से पूछा, "सचसच बताओ रज्जो, उस दिन तुम ने मुझ से जो सवाल पूछे थे, क्या उन का संबंध तुम से है? क्या तुम्हारे साथ कोई घटना घटी है?

"घबराओ मत. तुम इस समय मेरी मरीज हो. हमारे बीच जो भी बातें होंगी, वे राज रहेंगी. अगर तुम नहीं चाहोगी, तो मैं तुम्हारे पति को भी नहीं बताऊंगी."

यह सुन कर रज्जो फफकफफक कर रो पड़ी और रेल में हुई घटना सुनाई. उस ने कहा, "मुझे अभी भी शक ही है. मैं पक्का नहीं कह सकती कि वह सब वाकई मेरे साथ उस रात हुआ भी था या सिर्फ एक वहम है, क्योंकि मैं तब शायद अपने होशोहवास में नहीं थी या फिर इतने समय बाद पति मिलन को उतावली हो रही थी."

डाक्टर शालिनी ने कहा, "अगर तुम्हें पक्का करना है, तो उस आदमी का और अपने बच्चे का डीएनए टैस्ट करवा लो, सारी बात साफसाफ पता चल जाएगी."

रमेश के पूछने पर डाक्टर शालिनी ने बताया कि 2 बच्चों और घर की जिम्मेदारी से रज्जो की यह हालत हुई है और ज्यादा घबराने की जरूरत नहीं है.

घर आते ही रज्जो अलमारी में वह विजिटिंग कार्ड ढूंढ़ने लगी, जो विपिन ने नर्स को दिया था. कार्ड मिलने पर उस ने कांपते हाथों से अपने मोबाइल फोन से उस का नंबर मिलाया.

अगले दिन राघव को दिखाने के बहाने रज्जो अस्पताल पहुंच गई. विपिन पहले से वहां मौजूद था. उस ने अपने बुलाने की वजह पूछी, तो डाक्टर ने कहा कि टैस्ट की सभी कार्यवाही पूरी करने के बाद बता दिया जाएगा.

विपिन ने आनाकानी करनी चाही, तो डाक्टर शालिनी ने पुलिस को बुलाने की धमकी दी और उस से रेल की उस घटना का सच पूछा. इसी बीच पुलिस को बुला लिया गया और उन लोगों की हाजिरी में डीएनए टैस्ट कराया गया.

विपिन ने सब के सामने अपना गुनाह कबूल किया और कहा कि वह रेल में रज्जो की खूबसूरती पर फिदा हो गया था और उसे पाने की चाहत में उस ने कौफी में नशे की दवा मिला कर उन दोनों को पिला दी थी.

रमेश के गहरी नींद में सो जाने के बाद उस ने रमेश की टोपी पहन कर अंधेरी रात में उस घिनौनी वारदात को अंजाम दिया था.

विपिन को पुलिस के हवाले कर दिया गया. एक हफ्ते बाद रिपोर्ट आ गई. विपिन और राघव का डीएनए मैच कर रहा था.

डाक्टर ने रज्जो को रिपोर्ट पढ़ कर बताया, "राघव का पिता विपिन ही है."

उसी समय अस्पताल आए रमेश ने डाक्टर शालिनी की बात सुन ली और पूरी बात जानने के बाद तो वह अपना आपा खो बैठा. वहीं सब के सामने उस ने रज्जो को खरीखोटी सुनाई.

डाक्टर शालिनी ने उसे समझाने की लाख कोशिश की, पर रमेश हिकारत भरी नजरों से रज्जो को देखता हुआ उसे छोड़ कर चला गया.

रज्जो अपने ऊपर लगा इतना बड़ा इलजाम सह न सकी और सदमे से बेहोश हो गई. इस के बाद वह कोमा में चली गई. महीनेभर कोमा में रहने के बाद वह जिंदगी की जंग हार गई.

आज एक और अहिल्या किसी इंद्र के धोखे से बेइज्जत हुई. कोई कुसूर न होते हुए भी वह अपने ही पति द्वारा कुसूरवार ठहरा दी गई और ठुकरा दी गई.

आज कोई राम उस का उद्धार करने नहीं आया... न ही कोई राम उस की बेजान देह में प्राण लौटा सका, क्योंकि वह पति था परमेश्वर नहीं. ●

फ्रेम में सजे महापुरुष की दुविधा

अशोक गौतम

मैं ने औफिस की अपने पीछे वाली दीवार पर महापुरुषों की तसवीरें इसलिए नहीं लगाई हैं कि मैं उन की तरह हूं या होना चाहता हूं या कि मैं उन के पदचिह्नों पर चलने वाला सरकारी मुलाजिम हूं. होना बहुत मुश्किल होता है, दिखाना बहुत आसान.

होने का जोखिम मैं ही क्या, आज कोई भी नहीं उठाना चाहता. दिखने का सब आसानी से उठा लेते हैं, उठा रहे हैं. देश की मिट्टी तक बेच कर उस मिट्टी से सोना कमा रहे हैं.

मैं सरकार बदलते ही कई महापुरुषों की तसवीरें एकदम हटा कर रातोंरात उन की जगह नई सरकार के महापुरुषों की तसवीरें अपने औफिस की दीवार पर लटकाता रहने वाला महापुरुष हूं. और तब तक यह काम सारे काम छोड़ करता रहूंगा, जब तक सरकारी नौकरी में हूं, ताकि हर नई सरकार को मैं अपना बंदा लगूं.

तब मुझ से काम करवाने कोई आए, तो उस में यही इंप्रैशन जाए कि मैं टुच्चेपुच्चे टाइप का पिछली सरकार का अफसर नहीं, वर्तमान सरकार का खांटी पार्टी वर्कर हूं, नई सरकार का कोई महापुरुष टाइप का पुरुष हूं कि इन के उन के नीचे मुझे लेटेबैठे देख सब मुझे भी महापुरुष समझें, क्योंकि इन दिनों इसी तरह के महापुरुष होने का प्रचलन चलन में है.

अब औफिसों में कुछ बदलें या न, पर सरकार के बदलने के साथ सरकारी औफिसों के फ्रेम में बंद दीवारों पर टंगने वाले महापुरुष भी बदलते रहते हैं. सरकारों की कोई विचारधारा हो या न, पर अपनेअपने मार्क्ड महापुरुष जरूर होते हैं, जिन की पीठ पर सवार हो कर ये भी महापुरुष बने फिरते हैं. आज के समय का कोई ऐवरग्रीन महापुरुष नहीं, सत्ता समय महापुरुष हैं.

सरकार के साथ बदलते अपने औफिस की दीवार पर बदलते इन फ्रेमों में जबरदस्ती हंसते महापुरुषों को नजर न होने के बाद भी अकसर मैं ने देखा है कि वे वैसे तो सारा साल अपनीअपनी फ्रेम में बंद अपने गले के बदले अपनी फ्रेम पर कागजी फूलों की माला डलवाए, अपनी सरकार का मार्गदर्शन करने के लिए फ्रेम में बंद होने के बाद भी फ्रेम से बाहर आने को न दिखने वाली छटपटाहट लिए छटपटाते ही रहते हैं, पर जबजब इन की कोई जयंतीवयंती, पुण्यतिथि आती है, तब इन की फ्रेम से बाहर आने की छटपटाहट कुछ और ही बढ़ जाती है.

मतलब, तब फ्रेम में बंद होने के बाद भी इन की बाहर आने की छटपटाहट साफ महसूस करने की ताकत न होने के बाद भी साफ महसूस की जा सकती है.

तब मैं ने फ्रेम में जबरदस्ती मुसकराते बंद उस हंसते महापुरुष को फ्रेम से बाहर निकलने की पूरी कोशिश करते देखा तो जान गया कि या तो बंधु की पुण्यतिथि नजदीक है या फिर जयंती. इन महापुरुषों को अकसर इन्हीं 2 दिनों में फ्रेम से बाहर आने की इजाजत होती है.

वे महापुरुष आधे फ्रेम से बाहर निकल जाने के बाद बाकी बहुत मशक्कत के बाद भी न निकल पाए तो वे फ्रेम से बाहर निकलने को आड़ेतिरछे होते जोर मारते मदद को पुकारे तो मैं ने उन की मदद करने पर उन्हें बहुत गुस्सा होते देखा.

हद है यार, फ्रेम में बंद हो जाने के बाद भी चैन से नहीं रह सकते क्या? अब बाहर आ कर क्या नया करने का इरादा है?

फ्रेम में बंद मुसकराते दीवार पर टंगे महापुरुषों पर जब जरा गौर से नजर दौड़ाई, तो फ्रेम में बंद महात्मा गांधी वाले फोटो में छटपटाहट थी.

सच कहूं, तो उन्हें मैं ने जब से देखा है, फ्रेम में बंद ही देखा है या फिर खुले में उन का रोल करते फिल्मों में किसी और कलाकार को.

जब वे फ्रेम से बाहर निकलने को बहुत ही कराहने लगे, तो मैं ने उन के पास जा कर पूछा, "क्या है गांधी? छटपटा क्यों रहे हो? अब तो यहां ऐसे ही चलेगा. महापुरुष फ्रेम में बंद ही मुसकराते हुए अच्छे लगते हैं. अब तुम फ्रेम में ही बंद रहो, तो तुम्हारी भी इज्जत बनी रहे और हमारी भी."

"अपने सपनों के भारत को देखना चाहता हूं कि वह इस साल कितना और गिरा? साल में 1-2 दिन तो हमारा भी बाहर निकलना बनता है कि नहीं?"

"तुम बाहर निकलोगे तो दिवंगत होने के बाद भी तुम्हारा मन आत्महत्या करने को हो जाएगा," पता नहीं क्यों कह मैं ने दिया.

"मतलब? मरने के बाद भी क्या आदमी आत्महत्या करने की सोच सकता है?" गांधी ने जैसेतैसे फ्रेम में से पूरा निकलने की कोशिश करते हुए मेरी बाजू पकड़ कर पूछा, तो मैं ने कहा, "गांधी, फ्रेम में रहो तो हंसने को न चाहते हुए भी मन कर ही जाया करेगा. अब वह समय नहीं, जो तुम्हारे टाइम में था, क्योंकि वह कुछ बना ही नहीं जो तुम बनाना चाहते थे, तो ऐसे में फ्रेम से बाहर निकल क्यों परेशान होना?"

"तो फ्रेम से बाहर निकल कर अपने सपनों को बचाने के लिए सत्याग्रह करूंगा, उस के लिए असहयोग आंदोलन छेड़ूंगा," फादर औफ नेशन ने कहा, तो सुन कर मैं हंसा और बोला, "अरे माई डियर, कहने के लिए फादर औफ नेशन, अब तुम्हें अपनाने के लिए नहीं, दिखाने, खाने, सत्ता पाने, लोगों को बरगलाने मात्र के लिए फादर रह गए हो.

"अब तो यहां कदमकदम पर असत्याग्रह हो रहे हैं. देश को तोड़ने को एकदूसरे के लिए सहयोग हो रहे हैं. अब न कहीं विचार है, न कहीं आचार. सब मौके की देशभक्ति में रमे हैं.

"अब समय पहले से ज्यादा नाजुक चल रहा है, इसलिए प्लीज, सबकुछ किया करो, पर फ्रेम के भीतर रह कर ही," मैं ने कहा, तो उन की एक टांग फ्रेम के बाहर तो एक भीतर. उन का एक बाजू फ्रेम के बाहर तो दूसरा भीतर. मतलब, वे न फ्रेम के बाहर, न फ्रेम के भीतर. ●

फाइलेरिया
रोगों की आयुर्वेदिक दवा
टायफिल कैप्सलु एवं टायफिल तेल का प्रयोग करें।

फाइलेरिया से अण्डकोष या किसी अंग में सुजन, पानी या मांस के आ जाने पर शीघ्र आराम
पैर के उंगली मे पानी लगजाने पर टायफिल तेल को लगा कर पैर को थोड़ा सेक ले

(सेल्स मैन भी चाहिए)
जिला और ब्लॉक स्तर पर स्टॉकिस्ट हेतु सम्पर्क करें
STOCKIST: - DWAPER TRADERS | S.R ENTERPRISES
GOVIND MITRA ROAD, PATNA | 9835834770

कुछ लोग जानबूझ कर ट्रोल होते हैं

- नीलू शंकर सिंह

बृहस्पति कुमार पांडेय

भोजपुरी फिल्मों की मशहूर अदाकारा नीलू शंकर सिंह एक ऐसी हीरोइन हैं, जो अपनी ऐक्टिंग की बदौलत बहुत कम समय में पहचान बनाने में कामयाब रही हैं. उन्होंने साल 2017 में फिल्म 'बेटवा बाहुबली 2' से अपने फिल्म कैरियर की शुरुआत की थी, जिस में उन की अदाकारी को काफी सराहा गया था. उन का चेहरा बौलीवुड हीरोइन अमीषा पटेल से हूबहू मिलता है, जिस से लोग कई बार मात खा जाते हैं कि सामने नीलू शंकर सिंह हैं या अमीषा पटेल.

लेकिन असल में नीलू शंकर सिंह की पहचान उन की नैचुरल ऐक्टिंग और बिंदास अंदाज के चलते है, इसलिए भोजपुरी बैल्ट में उन्हें काफी पसंद किया जाता है.

नीलू शंकर सिंह की पहचान भोजपुरी फिल्मों के अलावा सोशल मीडिया पर भी जबरदस्त है. फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्म पर उन के चाहने वालों की तादाद लाखों में है.

नीलू शंकर सिंह की 14 फिल्मों की शूटिंग पूरी हो चुकी है. इन दिनों वे 'बी4यू' टीवी चैनल के लिए लगातार काम कर रही हैं, जिस में से उन की 'नई रस्में नई कसमें' और 'नकली सिंदूर' जैसी फिल्में रिलीज की जा चुकी हैं. इस के अलावा उन की आने वाली फिल्मों में 'हंगामा', 'छोरा छिछोरा', 'सुहागन', 'प्रेम युद्ध', 'हमरे भउजी के बहिनिया' खास हैं.

एक मुलाकात में नीलू शंकर सिंह के फिल्मी सफर पर लंबी बातचीत हुई. पेश हैं, उसी के खास अंश :

आप के लिए एक मिडिल क्लास फैमिली से फिल्मी दुनिया का सफर तय करना कितना मुश्किल रहा?

आप अंदाजा लगा सकते हैं कि एक छोटे से शहर रायबरेली की एक मिडिल क्लास फैमिली की लड़की घर की दहलीज लांघ कर ऐक्टिंग क्लास जौयन करे, डांस सीखे और औडिशन दे तो उस के आसपास के लोग तमाम तरह की बातें करते हैं और कैरेक्टर तक पर उंगली उठाते हैं. लेकिन इन सब बातों से न ही मैं घबराई और न ही मेरे परिवार के लोगों का हौसला कम हुआ. लेकिन, मैं यह जरूर कहूंगी कि फिल्म इंडस्ट्री का मेरा सफर थोड़ा मुश्किल रहा, लेकिन उसी जद्दोजेहद ने मुझे कामयाबी भी दिलाई.

क्या कामयाब होने के बाद भी कलाकार को जद्दोजेहद का सामना करना पड़ता है?

कामयाबी के मुकाम पर पहुंचने के बाद उस मुकाम को बनाए रखने के लिए जद्दोजेहद और भी बढ़ जाती है. ग्लैमर इंडस्ट्री में तो यह और भी बढ़ जाती है, क्योंकि आप की एक भी गलती आप को अर्श से फर्श पर ला कर पटक देती है.

एक हीरोइन को अपने फिगर, ऐक्टिंग, बरताव समेत तमाम छोटीछोटी चीजों को ले कर सजग रहने की जरूरत होती है और इस को बरकरार रखने के लिए जद्दोजेहद करनी ही पड़ती है. वैसे, मेरा मानना है कि जिंदगी में उतारचढ़ाव के बिना कामयाबी नहीं मिलती है.

ग्लैमर इंडस्ट्री के लोगों के सोशल मीडिया पर ट्रोल होने के पीछे की आप क्या खास वजह मानती हैं?

जहां तक ट्रोल होने की वजहों का सवाल है, तो छोटी से छोटी वजह भी सोशल मीडिया पर ट्रोल होने के लिए काफी है. इस में आप का पहनावा, फिगर, पोस्ट, तसवीरें कोई भी ट्रोल होने की वजह बन जाती है.

कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो सुर्खियों में बने रहने के लिए ऊलजुलूल चीजें सोशल मीडिया पर डालते रहते हैं, जिस से वे ट्रोल हो कर चाहने वालों की नजर में आने की कोशिश करते हैं.

बौलीवुड इंडस्ट्री पर नैपोटिज्म यानी भाईभतीजावाद का जबरदस्त आरोप लगता रहा है. भोजपुरी सिनेमा को ले कर आप क्या कहेंगी?

भोजपुरी सिनेमा अभी इस हालत में नहीं पहुंच पाया है कि इस पर नैपोटिज्म का आरोप लगाया जा सके. वैसे, मुझे लगता है कि जिन कलाकारों के फैमिली मैंबर इंडस्ट्री में आना चाहते हैं, उन का स्वागत करना चाहिए, क्योंकि हम किसी को कैरियर का चुनाव करने से नहीं रोक सकते हैं.

आजकल के मांबाप अपने बच्चों को पत्रिकाओं और कौमिक बुक खरीद कर देने के बजाय इलैक्ट्रौनिक गैजेट देने में यकीन रखते हैं. आप की नजर में इस का बच्चों पर कैसा असर पड़ रहा है?

किताबें और पत्रपत्रिकाएं बच्चों में कल्पना की कूवत को बढ़ाती हैं. इन से बच्चों की तर्क करने की ताकत बढ़ती है, जबकि इलैक्ट्रौनिक गैजेट बच्चों को समाज से दूरी बनाने की वजह बन रहे हैं.

भोजपुरी सिनेमा से जुड़े निर्माताओं को ले कर क्या कहेंगी?

भोजपुरी सिनेमा के निर्माताओं पर सिर्फ इस बात का दबाव नहीं है कि वे सिर्फ पैसा लगा कर फिल्में बना लें, बल्कि उन पर फिल्म से पैसों की रिकवरी और कमाई का दबाव भी होता है. इस में वही निर्माता कामयाब हो सकते हैं, जो अपनी फिल्म को बेहतर तरीके से प्रमोट करें और उसे ठीक से रिलीज करा पाएं.

आप का चेहरा बौलीवुड हीरोइन अमीषा पटेल से काफी मिलता है. क्या इस से आप के चाहने वाले कंफ्यूज नहीं होते हैं?

ऐसा कई बार हुआ है, जब लोग मुझे अमीषा पटेल समझ बैठे हैं. लेकिन मेरा मानना है कि मेरी अपनी खुद के चेहरे की पहचान होनी चाहिए, जो भोजपुरी बैल्ट में मैं ने हासिल कर ली है.

हां, मुझे यह खुशी जरूर होती है, जब लोग कहते हैं कि मैं हूबहू अमीषा पटेल जैसी दिखती हूं. ●

अमिताभ के आशियाने में कृति सेनन

लंबी, छरहरी और खूबसूरत हीरोइन कृति सेनन मुंबई में अपने लिए किराए का घर देख रही हैं और अब यह खबर आई है कि वे 'बिग बी' अमिताभ बच्चन के घर में रहेंगी.

दरअसल, कृति सेनन को मुंबई के अंधेरी इलाके में जो अपार्टमैंट्स पसंद आया है, वह अमिताभ बच्चन के नाम पर है और खबरों के मुताबिक वे बहुत जल्दी वहां शिफ्ट होने वाली हैं.

बता दें कि आजकल अमिताभ बच्चन अपनी कई प्रोपर्टी किराए पर दे रहे हैं. हाल ही में उन्होंने एक सरकारी बैंक को अपने जुहू वाले बंगले का ग्राउंड फ्लोर किराए पर दिया है.

'भीड़' का हिस्सा बनेंगे राजकुमार राव

अनुभव सिन्हा अपनी एक नई फिल्म को ले कर सुर्खियों में हैं, जिस का नाम 'भीड़' है. यह एक सियासी और सामाजिक ड्रामा फिल्म होगी, जिस में बतौर लीड हीरो राजकुमार राव दिखाई देंगे.

इस फिल्म की शूटिंग लखनऊ, उत्तर प्रदेश में होगी और अनुभव सिन्हा इस बात से जोश में हैं कि नैशनल अवार्ड विजेता राजकुमार राव इस 'भीड़' का हिस्सा बन रहे हैं. वे मानते हैं कि राजकुमार राव एक दिलचस्प कलाकार हैं, जो एक फिल्म की कहानी में अपनी अदाकारी से इंसाफ कर सकते हैं.

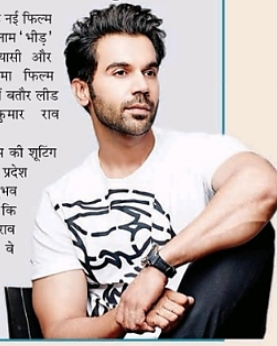

आशुतोष जमाएंगे नई जोड़ी

बड़े कलाकारों के साथ बड़े बजट की फिल्में बनाने वाले फिल्मकार और डायरैक्टर आशुतोष गोवारिकर की फिल्म 'पानीपत' भले ही काफी अच्छी बनाई गई थी, पर वह बड़े परदे पर पिट गई थी.

अब आशुतोष गोवारिकर नए स्टाइल की मारधाड़ वाली फिल्म बनाने की सोच रहे हैं. 'पुकार' नाम की इस फिल्म में फरहान अख्तर और रकुलप्रीत सिंह की जोड़ी जमती दिख रही है.

इस फिल्म की कहानी एक जंगल के इर्दगिर्द बुनी गई है, जिस में फरहान अख्तर एक फौरैस्ट रेंजर के किरदार में दिखाई देंगे. साथ ही, यह भी बता दें कि इस फिल्म की स्क्रिप्ट जावेद अख्तर लिखेंगे और दक्षिण भारत के सुपरहिट कलाकार जगपति बाबू बिलेन के तौर पर फिल्म को मजबूती देंगे. जगपति बाबू का यह हिंदी फिल्मों में डैब्यू होगा. ●

मैं 23 साल की कुंआरी लड़की हूं. मेरे परिवार में दूसरों की बेवजह बुराई का मानो चलन सा बन गया है. इस से हमारे रिश्तेदार, दोस्त, पड़ोसी सब हम से नाराज रहते हैं. वे हमारे घर आने से कतराते हैं. मैं घर से बाहर जाती हूं तो लोग इज्जत की नजर से नहीं देखते हैं. मैं बड़ी अजीब सी समस्या से जूझ रही हूं. मैं क्या करूं?

ऐसा अमूमन हर घर में होता है कि रिश्तेदारों और समाज वालों की बुराई करने में बड़ा मजा आता है, लेकिन आप के घर यह कुछ ज्यादा ही है, जिस से आप को कोफ्त और शर्मिंदगी महसूस होती है.

आप अपने घर वालों को समझाने की कोशिश करें कि दूसरों की बुराई से हमें कुछ हासिल नहीं होने वाला, उलटे नुकसान खुद का ही होता है. मुमकिन है कि यह बात उन की समझ में आए या न आए, तो भी आप अपना बरताव सही रखें और इस 'निंदा पार्टी' में शामिल ही न हों. ●

मैं 40 साल का हूं. मेरी शादी को 12 साल हो गए हैं. मेरे 2 बेटे हैं. उन दोनों में बिलकुल नहीं बनती है. वे एकदम कुत्तेबिल्ली की तरह लड़ते हैं. हालांकि अभी वे बच्चे ही हैं, पर बहुत ज्यादा उग्र हैं. कभीकभार तो लड़ाई में एकदूसरे का खून तक निकाल देते हैं.

मेरी पत्नी उन के गुस्से से खौफ खाती है. वे दोनों मेरी भी कम ही सुनते हैं. इस बात से हम बहुत ज्यादा परेशान हैं. मैं क्या करूं?

इस उम्र में बच्चों का उग्र होना आम बात है. लौकडाउन के बाद तो यह समस्या और बढ़ गई है. आप बच्चों को अपना समय दें. उन के साथ खेलें. उन्हें कुछ देर बिजी रखें और दोनों को अलगअलग जिम्मेदारी वाले काम सौंपें.

उन दोनों को समझाएं कि इस तरह के हिंसक बरताव में कभी भी कोई अनहोनी हो सकती है. अगर कोई रिश्तेदार तैयार हो तो किसी एक को कुछ दिन के लिए वहां भेज कर देखें. अगर वे दोनों लड़ते हैं, तो एकदूसरे को प्यार भी करते होंगे, जो आप को नहीं दिखता. उन्हें बाहर खेलने जाने दें, अच्छी किताबें व मैगजीन पढ़ने को दें. ●

मैं 32 साल की एक कुंआरी लड़की हूं. मेरे घर वाले मेरी शादी कराने का नाम ही नहीं लेते हैं. मैं छोटे कसबे की रहने वाली हूं, तो खुद अपनी शादी करने जैसा फैसला लेने की हिम्मत नहीं जुटा पाती हूं.

मैं नौकरी तो नहीं करती हूं, पर घरेलू काम सब कर लेती हूं. मैं 12वीं जमात तक पढ़ीलिखी हूं, पर शादी की उम्र निकलने की बात से मैं बहुत ज्यादा तनाव में रहती हूं. मैं क्या करूं?

ऐसा लगता है कि घर वालों ने आप को मुफ्त की नौकरानी समझ लिया है, इसलिए वे शादी की पहल नहीं कर रहे हैं.

अपने बेहतर भविष्य के लिए आप बिना दीनदुनिया की परवाह किए खुद अपनी मरजी से अच्छा सा लड़का देख कर शादी कर लें. इसी बीच कहीं छोटीमोटी नौकरी की भी कोशिश करें.

घर वाले इस का विरोध करें, तो सख्ती से उन्हें समझा दें कि अपनी जिंदगी से जुड़े अहम फैसले लेने का हक आप को है. ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

झुर्रियां
काले घेरे
छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- सन स्क्रीन
- फेस वाश

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

Online Shopping:
www.zeelabpharmacy.com

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2021-23/U(C) 163/2021-23 Saras Salil (Hindi) November-I
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 01 to 07. Published on 15/10/2021 Pgs.32